



RNI No. GUJHIN/2010/35230

महानगर मेट्रो

कार्यालय :- सी-8 रिची हाउस, स्वामी नारायण मंदिर के सामने मणिनगर अहमदाबाद गुजरात-380008

राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्र

महानगर मेट्रो

राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार पत्र, प्रेस नोट एवं विज्ञापन के लिए कार्यालय पर सम्पर्क करें

सबर्बजीत माकन

+91-9638877700

mahanagarmetro7@gmail.com

वर्ष : 15 | अंक:272 | पेज:08 | mahanagarmetro7@gmail.com

|| अहमदाबाद, (रविवार) 24 मई 2026 ||

सम्पादक - सबर्बजीत माकन (9638877700)।। मूल्य :- 1.50 रु.- |

दुनिया के 50 सबसे गर्म शहरों में सभी भारत के



यूपी के बांदा में पारा 47.6°C, एमपी-राजस्थान समेत 11 राज्यों में 40°C से 47°C; 2 दिन राहत नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। देश को अगले 2 दिन तक गर्मी से राहत के आसार नहीं हैं। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान समेत उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत के 11 राज्यों में तापमान 40°C से 47°C के बीच रहा।

इन 11 राज्यों में हीटवेव का अलर्ट जारी किया गया है। सबसे ज्यादा तापमान यूपी के बांदा में 47.6°C और एमपी के नौगांव में 46.8°C रहा। झर, बिहार के अररिया, जहानाबाद, नालंदा और सुपौल में बारिश हुई। यहां बिजली गिरने से 4 लोगों की मौत हो गई। जम्मू-कश्मीर के जोजिला और उत्तराखंड के चमोली-पिथौरागढ़ में बर्फबारी हुई। मौसम विभाग के मुताबिक एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन पाकिस्तान के ऊपर और एक बिहार के आसपास बना हुआ है।



राजस्थान के जयपुर में अधिकतम तापमान 41°C से ज्यादा रहा। गर्मी से राहत के लिए एक व्यक्ति ने सिर पर पानी डाला।

साथ ही अरब सागर में एक लो प्रेशर एरिया बना हुआ है। देश में सुबह असामान्य रिकॉर्ड दर्ज किया गया। दुनिया के 50 सबसे गर्म शहरों की लिस्ट में सभी शहर भारत के रहे।

उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, हरियाणा के कई शहर दोपहर से पहले ही 42 से 44°C तक पहुंच गए। अकेले उत्तर प्रदेश के 22 शहर गर्म शहरों की लिस्ट में थे।

अमरनाथ से बाबा बर्फानी की पहली फोटो आई

● 6-7 फीट का शिवलिंग बना, यात्रा 3 जुलाई से, जवानों ने दर्शन किए

एजेंसी

अमरनाथ। अमरनाथ यात्रा शुरू होने से पहले शनिवार को बर्फ से बने शिवलिंग (बाबा बर्फानी) की पहली तस्वीरें सामने आ गई हैं। तस्वीरों में दिख रहा है कि 6 से 7 फीट का शिवलिंग अपना आकार ले चुका है। इस दौरान सुरक्षा के लिए तैनात जवानों ने सबसे पहले शिवलिंग के दर्शन भी किए। अमरनाथ यात्रा इस साल 3 जुलाई 2026 से शुरू होकर 9 अगस्त 2026 तक चलेगी।

अमरनाथ यात्रा के लिए 3.6 लाख से ज्यादा रजिस्ट्रेशन इस साल की अमरनाथ यात्रा के लिए अब तक 3.6 लाख से ज्यादा श्रद्धालु रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं।



यात्रा मार्ग पर कई जगह अब भी 10 से 12 फीट तक बर्फ जमी है, लेकिन सीमा सड़क संगठन (BRO) दोनों रास्तों पर तेजी से

ट्रेक बहाल करने में जुटा है। अधिकारियों का दावा है कि 15 जून तक दोनों रास्ते पूरी तरह तैयार कर दिए जाएंगे। यात्रा 3 जुलाई से बालटाल-सोनमर्ग और पारंपरिक

नूनवान-पहलगाम मार्ग से शुरू होगी। 57 दिन की यह यात्रा 28 अगस्त को रक्षा बंधन और सावन पूर्णिमा के दिन संपन्न होगी। रजिस्ट्रेशन 15 अप्रैल से शुरू हुए थे।

5 से 30 लोगों के ग्रुप के लिए रजिस्ट्रेशन बंद

5 से 30 लोगों के ग्रुप में यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के लिए रजिस्ट्रेशन बुधवार को बंद हो गए। हालांकि, अकेले या छोटे ग्रुप में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए स्लॉट खाली रहने तक रजिस्ट्रेशन जारी रहेंगे। रजिस्ट्रेशन पंजाब नेशनल बैंक, जम्मू-कश्मीर बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और यस बैंक की तय शाखाओं के जरिए हो रहा है। अधिकारियों को उम्मीद है कि इस साल यह संख्या 5 लाख के पार जा सकती है। 2025 में 4.14 लाख श्रद्धालुओं ने दर्शन किए थे, जबकि 2024 में यह आंकड़ा 5.10 लाख से ज्यादा था।

कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने पेट्रोलियम की बढ़ती कीमतों को लेकर केंद्र पर बोला हमला, कहा-

संकट के बीच जनता को लूटा जा रहा है

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में लगातार हो रही बढ़ोतरी को लेकर केंद्र सरकार पर हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें कम होने के बावजूद जनता को राहत देने के बजाय लगातार पेट्रोल, डीजल, सीएनजी और एलपीजी के दाम बढ़ाकर आम लोगों पर अतिरिक्त बोझ डाल रही है। मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि बीते दस दिनों में तीसरी बार पेट्रोल और

डीजल के दाम बढ़ाए गए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार यह तर्क देकर अपनी जिम्मेदारी से बचने की कोशिश कर रही है कि भारत में ईंधन की कीमतें कई अन्य देशों की तुलना में कम हैं, जबकि सच्चाई यह है कि संकट के समय अन्य देशों ने अपनी जनता को राहत देने के लिए टैक्स में कटौती और राहत पैकेज की घोषणा की। उन्होंने कहा कि पश्चिम एशिया में जारी तनाव और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के दौरान इटली, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, ब्रिटेन और आयरलैंड जैसे देशों ने ईंधन पर टैक्स घटकाया या सब्सिडी देकर लोगों को राहत पहुंचाई।

ईंधन की बढ़ी कीमतों पर भड़के तेजस्वी यादव, कहा- आने वाले दिनों में जनता को भयंकर महंगाई डोलनी पड़ेगी

एजेंसी

पटना। पेट्रोल, डीजल और सीएनजी के मूल्य वृद्धि को लेकर बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने सरकार को घेरते हुए कहा है कि आने वाले दिनों में जनता को भयंकर महंगाई डोलनी पड़ेगी। उन्होंने सरकार को निशाने पर लेते हुए कहा कि मोदी सरकार ने आज फिर सीएनजी, पेट्रोल और डीजल के दाम बढ़ा दिए। एनडीए सरकार ने पिछले 10 दिनों में

तेल की कीमतों में लगभग 5 रुपए की वृद्धि की है, यानी 50 पैसे प्रतिदिन। अभी और बढ़ना शेष है। राजद के राष्ट्रीय कार्यकारि अध्यक्ष तेजस्वी यादव ने शनिवार को सोशल नेटवर्किंग साइट एक्स पर लिखा, 'जब क्रूड ऑयल सस्ता था, तब भी ये आपकी जेब छेदकर निजी कंपनियों को मुनाफा दिला कर थे और अब भी। जो भाव कच्चे तेल का



2014 में था, अब उससे भी बहुत कम है, लेकिन पेट्रोल-डीजल के दाम दुगुना हो गए हैं। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि आने वाले दिनों में जनता को भयंकर महंगाई डोलनी पड़ेगी, प्राइवेट सेक्टर की नौकरियां जाएंगी, प्रवासी श्रमिक वापस लौटेंगे, लघु उद्योग-धंधे कम होंगे, गरीबी-बेरोजगारी बढ़ेगी। सरकार को निशाने पर लेते हुए उन्होंने कहा कि

नफरत का कारोबार, भाषणबाजी, रील्स और एंटरटेनमेंट के लिए जिसे चुना था, वो 'फूल इंटरटेनमेंट' मिलता रहेगा। नौकरी, गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी, कृषि, गांव किसान, शिक्षा-स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था इत्यादि पर हाव विचार-विमर्श और ध्यान केंद्रित देने की बजाय इनका फोकस संवैधानिक संस्थाओं के दुरुपयोग, हेडलाइन मैनेजमेंट, हिंदू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद, गाय-गोबर और स्थलों के नाम बदलने पर रहेगा।

भागीदार बन रहे हैं। रेलवे, बैंकिंग, डिफेंस, हेल्थ, एजुकेशन और दूसरे कई क्षेत्रों में आप सभी नई जिम्मेदारियां संभालने जा रहे हैं। आने वाले वर्षों में विकसित भारत के



देता हूं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए नवनियुक्त युवाओं से संवाद करते हुए पीएम मोदी ने कहा, 'आज आप सभी देश की विकास यात्रा में अहम भागीदार बन रहे हैं, जिम्मेवार

● 'रोजगार मेला' युवाओं को नए अवसर प्रदान कर सशक्त बनाने के प्रति हमारी सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। - प्रधानमंत्री

संकल्प को सिद्ध करने में आप सभी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। ' उन्होंने कहा, 'अभी दो दिन पहले मैं पांच देशों की यात्रा करके लौटा हूं। कहने को तो ये सिर्फ पांच देशों की यात्रा थी, लेकिन इस दौरान मेरी दर्जनों देशों की बड़ी बड़ी

कंपनियों के लीडर्स से बातें हुईं, विस्तार से चर्चा हुई। इस दौरान हर जगह मैंने एक बात समान रूप से महसूस की है। दुनिया भारत के युवाओं और भारत की

यही है कि भारत के युवाओं को अवसर मिले, रोजगार मिले और उनका सामर्थ्य खिल उठे। साथ ही साथ, मैं चाहता हूं कि देश के नौजवानों को ग्लोबल एक्सपोजर भी मिले। उन्होंने कहा, 'आज स्वच्छ ऊर्जा, महत्वपूर्ण खनिज, हरित हाइड्रोजन और टिकाऊ विनिर्माण से जुड़े क्षेत्र भी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। इनसे जुड़ी साझेदारी एक नई अर्थव्यवस्था के नए अवसर के दरवाजे खोल रही हैं। स्वीडन, नॉर्वे और इटली जैसे देशों के साथ 'ग्रीन ट्रांजिशन एंड सस्टेनेबल टेक्नोलॉजी' में भी सहयोग बढ़ रहा है। ये भारत को क्लीन मैनुफैक्चरिंग से जुड़ी फ्यूचर इंडस्ट्री में मजबूत करेगा।'

केरल के मुख्यमंत्री वीडी सतीशन ने दिल्ली में कांग्रेस नेतृत्व से की मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली। केरल के नवनियुचित मुख्यमंत्री वीडी सतीशन ने शनिवार को नई दिल्ली में कांग्रेस के शीर्ष नेताओं से मुलाकात की। मुख्यमंत्री बनने के बाद यह उनका पहला दिल्ली दौरा है। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी वाड़ा से भेंट कर विभिन्न राजनीतिक और संगठनात्मक मुद्दों पर चर्चा की। दिल्ली पहुंचने के बाद सतीशन ने सबसे पहले कांग्रेस महासचिव (संगठन) केसी वेणुगोपाल से उनके आवास पर मुलाकात की। इसके बाद वे कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के आवास पहुंचे, जहां खरगे ने उन्हें पारंपरिक पटका पहनाकर सम्मानित किया और मुख्यमंत्री बनने पर शुभकामनाएं दीं। इसके बाद सतीशन ने सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड़ा से अलग-



अलग मुलाकात की। पार्टी सूत्रों के अनुसार, इस दौरान केरल की राजनीतिक स्थिति, राज्य सरकार की प्राथमिकताओं और पार्टी संगठन से जुड़े विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। कांग्रेस नेतृत्व ने सतीशन को नई जिम्मेदारी के लिए बधाई देते हुए राज्य में सरकार के सफल संचालन की शुभकामनाएं दीं।

● दिल्ली हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

निजी स्कूल सत्र शुरू होने से पहले बिना सरकारी मंजूरी बढ़ा सकते हैं फीस

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने प्राइवेट स्कूलों की फीस बढ़ोतरी को लेकर एक बड़ा फैसला सुनाया है। हाईकोर्ट ने कहा कि दिल्ली में बिना सरकारी मदद वाले प्राइवेट स्कूल नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में फीस बढ़ा सकते हैं। इसके लिए उन्हें शिक्षा निदेशालय (डीओई) की अनुमति लेने की जरूरत नहीं है। हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि अगर स्कूल नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में फीस बढ़ाता है, तो उसे सिर्फ शिक्षा निदेशालय को सूचना देनी है, उन्हें अनुमति लेने की जरूरत नहीं होगी। हालांकि अगर स्कूल शैक्षणिक



की बढ़ी हुई फीस का बकाया अब नहीं वसूल सकते। यानी 2016-17 या पुराने सत्रों की बढ़ी फीस अब अभिभावकों से नहीं मांगी जा सकती। स्कूलों की आखिरी प्रस्तावित फीस वृद्धि अब अप्रैल 2027 से ही लागू

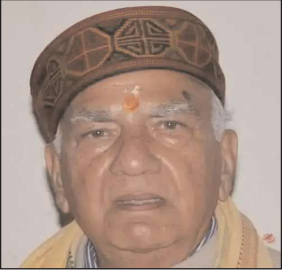
होगी। कोर्ट ने शिक्षा निदेशालय के उन सभी आदेशों को रद्द कर दिया, जिनमें शैक्षणिक सत्र की शुरुआत में फीस बढ़ाने के प्रस्तावों को खारिज कर दिया गया था। कोर्ट ने निदेशालय के पास पेंडिंग फीस बढ़ाने के प्रस्तावों को भी बंद कर दिया। कोर्ट ने निदेशालय के उस अंतर को भी खारिज कर दिया जो 'लैंड क्लॉज' (जमीन से जुड़ी शर्त) के तहत आने वाले स्कूलों और ऐसे क्लॉज के तहत न आने वाले स्कूलों के बीच किया गया था। कोर्ट ने कहा कि लैंड क्लॉज, जो अमोर्ट पर अलॉटमेंट लेट में एक शर्त होती है, उसे एकट और नियमों के दायरे में ही काम करना चाहिए।

आरक्षण का लाभ केवल

जरूरतमंदों को मिले : शांता कुमार

एजेंसी

शिमला। पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री शांता कुमार ने कहा है कि उच्चतम न्यायालय ने एक बार फिर आरक्षित वर्गों में संपन्न परिवारों को आरक्षण का लाभ दिए जाने के मुद्दे पर महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक के एक मामले में पिता और माता दोनों उच्च प्रशासनिक पदों पर होने के बावजूद उनके पुत्र को आरक्षण का लाभ दिया गया, जिसके खिलाफ प्रभावित व्यक्ति ने लंबी कानूनी लड़ाई लड़ी और मामला उच्च न्यायालय से होते हुए उच्चतम न्यायालय पहुंचा। न्यायालय ने अपने निर्णय में कहा कि उच्च पदों पर कार्यरत माता-पिता के बच्चों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के स्तर पर भी आरक्षित वर्गों में क्रीमी लेयर को बाहर करने को लेकर चर्चा होती रही है।



और सामाजिक रूप से संपन्न हो चुके परिवारों को बार-बार इसका लाभ नहीं मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के स्तर पर भी आरक्षित वर्गों में क्रीमी लेयर को बाहर करने को लेकर चर्चा होती रही है।

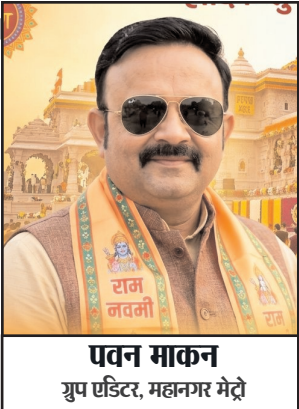
राजीव चंद्रशेखर का विपक्ष पर पलटवार, कहा-

'कॉंकरोच पार्टी' का अभियान देश को अस्थिर करने की साजिश

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व केंद्रीय मंत्री और भाजपा नेता राजीव चंद्रशेखर ने शनिवार को विपक्षी दलों पर निशाना साधा है। उन्होंने 'कॉंकरोच पार्टी' को देश और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार के खिलाफ 'सीमा पार प्रभाव अभियान' चलाने का आरोप लगाया है। राजीव चंद्रशेखर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक महत्वपूर्ण पोस्ट करते हुए विपक्षी दलों पर निशाना साधा है। उन्होंने लिखा, 'कॉंकरोच पार्टी की चाल एक और क्लासिक सीमा पार प्रभाव अभियान है, जिसका निशाना भारत और पीएम मोदी की सरकार है। इसे कुछ स्थायी तत्वों ने भारत को अस्थिर करने के लिए डिजाइन किया है और इसमें हमारे विपक्ष के कुछ तत्वों ने भी मदद की है।' उन्होंने चेतावनी दी कि सोशल मीडिया, बॉट्स और आर्टिफिशियल इंटीलिजेंस (एआई) के इस दौर में 'प्रभाव अभियान' भारत की स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बन गए हैं। ये अभियान नकली लेकिन वास्तविक लगने वाले नैरेटिव गढ़कर जनमानस को प्रभावित करने का काम करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत का उदय और आधुनिकीकरण कई देशों को खतक रहा है। उन्होंने लिखा, 'कोविड महामारी, रूस-यूक्रेन युद्ध, यूएस-ईरान तनाव, ऊर्जा संकट और चीनी आक्रामकता जैसी वैश्विक चुनौतियों के बावजूद पीएम मोदी ने भारत को सुरक्षित और मजबूत बनाए रखा है।

नक्सलवाद के साथ नक्सलवादी मानसिकता का खात्मा भी जरूरी



सरकार का सही दिशा में सही कदम इन क्षेत्रों और आमजन में न केवल विकास की नयी बुनियाद रखेगा वरन आमजन के भरोसे और विश्वास पर भी खरा उतरना होगा क्योंकि भौतिक तौर पर नक्सलवाद का खात्मा अलग बात है लेकिन नक्सलवादी मानसिकता को समूल नष्ट करना एक दीर्घ प्रक्रिया है और इस के लिए विश्वास भरोसा और ईमानदारी पर खरा उतरना होगा।

नक्सलवाद के लगभग पूरी तरह खत्म होने का दावा काफी हद तक सही है, क्योंकि हाल के वर्षों में सुरक्षा बलों ने नक्सलियों के खिलाफ निर्णायक जीत हासिल की है। सरकार द्वारा निर्धारित 31 मार्च, 2026 की समय-सीमा तक वामपंथी उग्रवाद को अपने सबसे मजबूत गढ़ों (जैसे बस्तर) से काफी पीछे धकेल दिया गया है।नक्सलवाद की समाप्ति के दावों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि जमीनी कार्रवाई में बड़ी सफलतासुरक्षा बलों ने नक्सल विरोधी अभियानों में भारी सफलता हासिल की है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, पिछले दो वर्षों में सैकड़ों कुख्यात नक्सली कमांडरों को मुठभेड़ में मार गिराया गया है और हजारों नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। घटना दायरा (रेड कॉरिडोर)कभी देश के करीब 180 जिलों में फैला नक्सली प्रभाव अब सिमटकर बहुत ही कम क्षेत्रों (मुख्य रूप से दक्षिण छत्तीसगढ़ के अंदरूनी इलाकों) तक रह गया है। मध्य प्रदेश जैसे कई राज्यों को आधिकारिक तौर पर नक्सल मुक्त घोषित किया जा चुका है लेकिन अभी नक्सली मानसिकता का समूल नष्ट करना बाकी है।

आपको बता दें कि भारत के लिए नक्सलवाद केवल कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं था, बल्कि यह देश की आंतरिक सुरक्षा, लोकतांत्रिक व्यवस्था और आदिवासी समाज के भविष्य से जुड़ा एक गहरा संकट था। दशकों तक नक्सल हिंसा ने देश के अनेक हिस्सों, विशेषकर छत्तीसगढ़ के बस्तर जैसे क्षेत्रों को भय, अविश्वास और पिछड़ेपन के अंधेरे में धकेले रखा। उससे मुक्ति निश्चित रूप से स्वागत योग्य है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बस्तर को नक्सलवाद से मुक्त बताते हुए यह भी कहा कि अब सरकार की जिम्मेदारी पिछले 50 वर्षों के नुकसान की भरपाई करना है और बस्तर को देश के सबसे विकसित आदिवासी क्षेत्रों में शामिल करना है। सरकारी बयान के अनुसार, 3,000 आत्मसमर्पण कर चुके नक्सलियों को सम्मानजनक जीवन देने और बस्तर को विकसित भारत की यात्रा से जोड़ने पर जोर दिया गया है। ऐसे में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा बस्तर से यह कहना कि भारत नक्सलवाद से मुक्का हो चुका है, निस्संदेह एक ऐतिहासिक क्षण है। यह घोषणा केवल सरकार की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन हजारों जवानों, पुलिसकर्मियों, स्थानीय आदिवासियों और निरदोष नागरिकों के संघर्ष की परिणति है, जिन्होंने इस लंबी लड़ाई में अपनी जान, परिवार और भविष्य तक दांव पर लगा दिया। नक्सलवाद का इतिहास देश के लिए पीड़ा से बरा रहा है। 1970 के दशक से लेकर लंबे समय तक यह हिंसक विचारधारा गरीबों, आदिवासियों और वंचितों के नाम पर बंदूक की राजनीति करती रही। जिन लोगों के



अधिकारों की बात कर नक्सल आंदोलन खड़ा किया गया था, सबसे अधिक नुकसान भी उन्हीं गरीबों और आदिवासियों को उठाना पड़ा। स्कूल जलाए गए, सड़कें नहीं बनने दी गईं, स्वास्थ्य केंद्रों का विरोध हुआ, सरकारी योजनाओं को गांवों तक पहुंचने से रोका गया और युवाओं को शिक्षा के बजाय हथियार थमा दिए गए। आपको पता है कि यह विडंबना ही थी कि विकास के नाम पर शुरू हुआ आंदोलन विकास का सबसे बड़ा विरोधी बन गया। बस्तर इसका सबसे बड़ा उदाहरण रहा है। प्राकृतिक संपदा, आदिवासी संस्कृति और मानवीय संभावनाओं से भरपूर यह क्षेत्र लंबे समय तक भय का दूसरा नाम बना रहा। रात में आवाजाही चंद, गांवों में खामोशी, स्कूलों में ताले, सड़क निर्माण पर हमला और सुरक्षा बलों पर घात लगाकर वार, यह सब बस्तर की सामान्य पहचान बन चुका था। नक्सलियों के डर के कारण सरकारी योजनाएं कागजों में रह जाती थीं और आम आदिवासी नागरिक अपने ही देश की विकास यात्रा से कट जाता था। थान की खरीद, मुफ्त राशन, शिक्षा, नौकरी में आरक्षण, स्वास्थ्य रक्षण, स्वास्थ्य सुविधा और सड़क जैसी बुनियादी वोजें भी कई इलाकों में सपने जैसी थीं। इसलिए जब गृह मंत्री ने कहा कि बस्तर के लिए यह बड़ा दिन है और देश नक्सलवाद से मुक्त हो चुका है, तो यह बयान केवल राजनीतिक घोषणा नहीं माना जाना चाहिए। यह उन सुरक्षा बलों के परिश्रम की मान्यता है, जिन्होंने बेहद कठिन भौगोलिक परिस्थिति, जंगलों, पहाड़ियों और बारूदी सुरंगों के बीच संघर्ष किया। सीआरपीएफ, कोबरा कमांडो, डीआरजी, राज्य पुलिस और स्थानीय सुरक्षा

बलों ने जिस साहस, धैर्य और रणनीति के साथ अभियान चलाए, यह भारत की आंतरिक सुरक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस सफलता में स्थानीय आदिवासी समाज की भूमिका भी कम नहीं है। जब स्थानीय जनता का भरोसा शासन और सुरक्षा बलों पर बढ़ता है, तभी किसी भी हिंसक आंदोलन की जमीन कमजोर होती है। नक्सलवाद के खिलाफ जीत केवल सैन्य या पुलिस कार्रवाई से संभव नहीं थी। इसकी असली सफलता सुरक्षा और विकास के संतुलित मॉडल में निहित है। यदि बंदूक के जवाब में केवल बंदूक होती, तो समस्या शायद कमजोर होती, लेकिन समास नहीं होती। नक्सलवाद को जड़ से खत्म करने के लिए जरूरी था कि गांवों तक सड़क पहुंचे, बच्चों तक स्कूल पहुंचे, बीमारों तक अस्पताल पहुंचे और युवाओं तक रोजगार पहुंचे। अब जब सरकार यह कह रही है कि बस्तर को देश का सबसे विकसित आदिवासी क्षेत्र बनाया जाएगा, तो मही इस सफलता की अगली कसौटी होगी। गृह मंत्री द्वारा केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के 70 कैंपों को विकास के यन-स्टॉप सेंटर के रूप में विकसित करने की बात अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ यह है कि जो कैंप पहले केवल सुरक्षा के प्रतीक थे, वे अब सरकारी योजनाओं, जनसेवा और विश्वास निर्माण के केंद्र बनेंगे। यदि इन केंद्रों के माध्यम से आदिवासियों को 370 सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे मिले, तो यह बस्तर की दिशा बदल सकता है। लेकिन इसके लिए कागजी घोषणा से अधिक जमीन पर ईमानदार क्रियान्वयन की आवश्यकता होगी। अधिकारी गांवों तक जाएं, आदिासी भाषाओं और संस्कृति को समझें, स्थानीय

अलनीनो से प्रभावित होने के बाद भारत के पास क्या इंतजाम ?

महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारतीय मौसम विभाग अब पहले की तुलना में अधिक सटीक और समय रहते मौसम पूर्वानुमान जारी कर रहा है। उपग्रह तकनीक और आधुनिक वैज्ञानिक प्रणालियों के जरिए सरकार मानसून की स्थिति पर लगातार नजर रखती है। इससे राज्यों और किसानों को पहले से तैयारी करने में मदद मिलती है। कृषि क्षेत्र में भी बदलाव की कोशिशें की जा रही हैं। सरकार सूखा-रोधी बीजों को बढ़ावा दे रही है तथा किसानों को कम पानी वाली फसलों की ओर प्रेरित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी योजनाएं किसानों को प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुकसान की भरपाई में सहा रा देती हैं। इसके अलावा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत ड्रिप और स्पिंकलर जैसी आधुनिक सिंचाई तकनीकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, ताकि कम पानी में अधिक उत्पादन संभव हो सके। जल संरक्षण की दिशा में भी कई प्रयास हो रहे हैं। जल शक्ति अभियान, तालाबों के पुनर्जीवन, वर्षा जल संचयन और भूजल संरक्षण जैसे कार्यक्रमों पर सरकार विशेष ध्यान दे रही है। कई राज्यों ने स्थानीय स्तर पर जल प्रबंधन को मजबूत करने के लिए सामुदायिक भागीदारी भी बढ़ाई है। यह समझना जरूरी है कि भविष्य में जल ही सबसे बड़ी चुनौती बनने वाला है। ऊर्जा क्षेत्र में भी भारत अब केवल जलविद्युत पर निर्भर नहीं रहना चाहता। सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार से ऊर्जा सुरक्षा मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा है। यदि सूखे की स्थिति में जलाशयों का स्तर घटे, तब भी बिजली संकट को नियंत्रित किया जा सकेगा। फिर भी यह कहना जल्दबाजी होगी कि भारत पूरी तरह तैयार है। आज भी कई ग्रामीण क्षेत्रों में सिंचाई की सुविधाएं सीमित हैं। जल संरक्षण योजनाएं कागजों से

आगे नहीं बढ़ पातीं। किसानों तक समय पर सही जानकारी पहुंचाने में भी कई बार कमी दिखाई देती है। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जलवायु परिवर्तन अब पहले से अधिक अतिश्रित और गंभीर होता जा रहा है। अलनीनो जैसी प्राकृतिक घटनाएं हमें यह संदेश देती हैं कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। भारत को केवल राहत योजनाओं पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीति पर ध्यान देना होगा। जल संरक्षण, वैज्ञानिक खेती, हरित ऊर्जा और पर्यावरण सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना समय की मांग है।

यदि केंद्र और राज्य सरकारें, वैज्ञानिक संस्थान, किसान और आम नागरिक मिलकर जिम्मेदारी निभाएं, तो भारत अलनीनो जैसी चुनौतियों का मुकाबला मजबूती से कर सकता है। संकट बड़ा है, लेकिन तैयारी और सामूहिक प्रयास उससे भी बड़े हो सकते हैं।

अलनीनो से फसलों पर पड़ेगा प्रभाव ?

विष्व मौसम व्यवस्था में होने वाले बदलावों का सबसे अधिक असर कृषि पर पड़ता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानसून केवल मौसम नहीं, बल्कि करोड़ों किसानों की आजीविका और देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। ऐसे में जब प्रशांत महासागर में समुद्री तापमान बढ़े ? से अलनीनो की स्थिति बनती है, तब उसका सीधा प्रभाव भारतीय मानसून और फसलों पर दिखाई देता है। यही कारण है कि अलनीनो को भारतीय कृषि के लिए एक गंभीर चेतावनी माना जाता है।

अलनीनो के दौरान सामान्यतः भारत में वर्षा कम होती है। मानसून कमजोर पड़े ? से खेतों में पानी की कमी हो जाती है और खरीफ फसलें सबसे अधिक प्रभावित होती हैं। धान, मक्का, सोयाबीन, दालें और गन्ना जैसी फसलें पर्याप्त वर्षा पर निर्भर रहती हैं। जब समय पर बारिश

युद्ध, अविश्वास और बयानबाजी के बीच भारत का बढ़ता सम्मान

ईरान को बर्बाद कर देने के दावे करने के बावजूद ईरान का और ज्यादा आक्रामक होते चले जाना, यूरोपीय एकता की मिसाल कहे जाने वाले नाटो का हालातो से किनारा कर जाना, युद्ध में अपनी जमीन का दुर्упयोग ना होने देगे संबंधी फ्रांस का दो टुक जवाब, सीज फायर की नौबत आगं पी तो एक और समझौते की बात करना फिर साथ में इस युद्ध में उलझे हुए देशों द्वारा एक दूसरे को खत्म करने की धमकी भी देते चले जाना, ऐसे मामले हैं जो उपरोक्त मामलों में विद्वता झाड़ रहे बड़बोले नेताओं की गंभीरता को कम करते हैं। नतीजा यह है कि विश्व समझ ही नहीं पा रहा, परस्पर एक दूसरे से जूझ रहे देश के नेताओं की कौन सी बात मांनं और कौन सी नहीं। यानि असमय और हर वक्त मुंह चलाने की आदत ने शाब्दिक जुगाली करने के आदी नेताओं को अविश्वसनीय बना दिया है। हालत यह बन गए हैं कि एक देश का राष्ट्र अध्यक्ष दूसरे को गंभीरता से लेना ही नहीं चाहता। हालत ये हो गई कि कल जिन देशों को शत्रु राष्ट्र समझा जा रहा था अब उन का साथ बैठना देशों की मजबूरी के रूप में देखा जा रहा है। लेकिन जग हंसाई इस पर भी हो रही है कि नेता आपस में मिल रहे हैं। कैसे भी जंग समाप्त हो, इसके सच्चे झुठे रास्ते भी तलाश रहे हैं। लेकिन इसे अविश्वास की पराक्राश ही कहा जाएगा कि स्वयं को विश्व का ठेकेदार समझने वाले ऐसे वाताकांर साझा प्रेस कांफ्रेंस करने की हिम्मत तक नहीं कर पा रहे। उससे भी ज्यादा अपमानजनक हालत यह बने कि एक राष्ट्र अध्यक्ष दूसरे राष्ट्र की यात्रा पर जा रहा है तो यजमान राष्ट्राध्यक्ष द्वारा प्रोटोकॉल के तहत आगंतुक अति विशिष्ट जन की सम्मानजनक अगवानी तक नहीं की जा रही कालिग मिलाकर अमेरिका ईरान का सीज फायर संकट में है। हॉर्मुज स्ट्रेट का मामला सिर दर्द बना हुआ है। रूस यूक्रेन पहले को तरह ही मोचे पर डटे हुए हैं। किसी की ताड़वान तो किसी की क्यूवा पर गंदी नजर है। जिन्हें खुद

पर गुस्रा था अब वो खुद चलकर उन देशों की यात्रा कर रहे हैं, जिन्हें कल तक शत्रु देश कहा जा रहा था। हद तो यह है कि शाब्दिक जुगलियों के लिए बदनाम हो चुके स्वयंभू विद्वानों को मध्यस्थता के लिए भी मिला तो पाकिस्तान। वह पाकिस्तान, जिसके बारे में कहा जाता है कि कल उसका अस्तित्व दुनिया के नक्शे पर रहेगा भी या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं है। क्योंकि पाकिस्तान खुद आतंकवाद को पाल पोसकर अपनी मौत का बंदोबस्त कर चुका है।

बड़ा आश्चर्य होता है यह सोचकर कि हमारे देश के अनेक विपक्षी नेता काफी चिल्लापों इस बात पर मचा रहे थे कि इतना सब हो रहा है, पर हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी कुछ नहीं बोल रहे। इस बात पर भी आपत्ति जताई गई कि बोलते भी हैं तो बेहद कम और अपने मतलब की बात करते हैं। अब जब पूरा वैश्विक परिदृश्य सामने है, तब ऐसे स्वयंभू ज्ञानियों को समझाना थोड़ा आसान प्रतीत होता है कि इस अशांति पूर्ण माहौल में अकारण मुंह चलाने वालों की कैसी दुर्दशा हो रही है? लेकिन हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हैं, जो चुपचाप अपना कार्य करते चले जा रहे हैं। बड़बोले नेताओं के देश ईंधन से मेहरूम होकर बबादी की कगार पर हैं। जहां थोड़ा बहुत ईंधन है भी तो दाम दुगने चौगुने करने की लालचारी है।लेकिन भारत एकमात्र ऐसा देश है जो भारी हिंसा और युद्ध कालीन विभीषिकाओं के बीच भी शांति का टापू बना हुआ है। हमारे यहां डीजल पेट्रोल और रसोई गैस का पर्याप्त स्टॉक मौजूद है। कारण सिर्फ यही है कि हमारे नेता श्री नरेंद्र मोदी दूसरों के मामले में अपनी टांग फंसाने का शौक नहीं रखते। और ना ही उन्हें यह मंजूर है कि कोई हमारे मामलों में अपनी नाक घुसेड़े। वे अमेरिका और इजरायल से बात करते हैं तो ईरान सहित अन्य खाड़ी देश का भी सम्मान बनाए रखते हैं। जहां भी बात करते हैं तो नेशन फर्स्ट की सोच आगे रखकर ही बेहद सधे हुए कदम बढ़ाते हैं। इसी परिपक्वता का परिणाम है

जरूरतों के आधार पर योजनाएं बनें और भ्रष्टाचार को सख्ती से रोका जाए। इसके लिए जमीन अधिकार, चन अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, इंटरनेट, सड़क, पेयजल और स्थानीय भागीदारी को प्राथमिकता देनी होगी। आदिवासी समाज को विकास का केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि भागीदार बनाना होगा। बस्तर का विकास दिल्ली या रायपुर के दफ्तरों से नहीं, बल्कि बस्तर के गांचों, युवाओं, महिलाओं और पारंपरिक नेतृत्व की सहभागिता से तय होना चाहिए। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कभी माओवादी हिंसा को देश की सबसे बड़ी आंतरिक सुरक्षा चुनौती चताया था। यह स्वीकारोक्ति इस समस्या की गंभीरता को दर्शाती थी। यदि आज देश उस चुनौती से निर्णायक मुक्ति की ओर बढ़ा है, तो यह भारतीय राज्य की दीर्घकालिक क्षमता, सुरक्षा बलों के त्याग और लोकतांत्रिक शासन की मजबूती का प्रमाण है। मोदी सरकार के कार्यकाल में आंतरिक सुरक्षा, विकास और निर्णायक नीति निर्माण को लेकर कई बड़े कदम उठाए गए हैं। नक्सलवाद के विरुद्ध मिली सफलता उनमें अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाएगी, क्योंकि इसका सीधा संबंध आम नागरिक की सुरक्षा और राष्ट्र की अखंडता से है। बस्तर की देश का सबसे विकसित आदिवासी क्षेत्र बनाने का लक्ष्य केवल एक राजनीतिक बादा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय कर्तव्य है। जिन गांवों ने दशकों तक गोली की आवाज सुनी, यहां अब स्कूलों की घंटी बजनी चाहिए। जिन रास्तों पर बारूदी सुरंगें बिछाई जाती थीं, वहां अब एम्बुलेंस, बसें और बाजार पहुंचने चाहिए। जिन युवाओं को बंदूक दी गई थी, उनके हाथों में अब किताब, कंप्यूटर और रोजगार के अवसर होने चाहिए। यही नसलवाद पर अंतिम और वास्तविक विजय होगी। नक्सलमुक्त भारत की घोषणा ऐतिहासिक है, लेकिन विकसित चतुर्व्व का निर्माण उससे भी बड़ा कार्य है। सुरक्षा बलों ने अपना कर्तव्य निभा दिया है। अब बारी शासन, प्रशासन और समाज की है। अगर बस्तर बदलेगा, तो भारत की विकास यात्रा और मजबूत होगी। सच यही है कि विकसित भारत का सपना तब तक अधूरा रहेगा, जब तक बस्तर और देश के हर आदिवासी क्षेत्र को न्यायपूर्ण विकास, सम्मान और सुरक्षा का पूरा अधिकार नहीं मिल जाता। सरकार का सही दिशा में सही कदम इन क्षेत्रों और आमजन में न केवल विकास की नयी बुनियाद रखेगा वरन आमजन के भरोसे और विश्वास पर भी खरा उतरना होगा क्योंकि भौतिक तौर पर नक्सलवाद का खात्मा अलग बात है लेकिन नक्सलवादी मानसिकता को समूल नष्ट करना एक दीर्घ प्रक्रिया है और इस के लिए विश्वास भरोसा और ईमानदारी पर खरा उतरना होगा।

संपादकीय

मां-बाप का हक

संवेदनाओं के क्षरण व आत्मकेद्रित होती नई पीढ़ी के दौर में मां-बाप की बेकद्री विचलित करने वाली है। यह विडंबना ही है कि उन मां-बाप की देखभाल करने का निर्देश अदालत को देना पड़ रहा है, जिनका ऋण वे कभी चुका ही नहीं सकते। मां के रक्त से सींचे गए और पिता की पसोने से पले-बढ़े बेटे से यदि अदालत को कहना पड़े कि 'मां को घर में रहने के लिये एक कमरा, अलग बाथरूम और बुनियादी सुविधाएं दी जाएं', तो यह बात शर्मसार करने वाला है। जिस मां ने नौ माह तक बेटे को अपने पेट में पाला, उसे घर में रहने देने के लिये अदालत को निर्देश देना पड़े, इससे बड़ा कृतघ्नता का दूसरा उदाहरण नहीं हो सकता। भले ही यह कोर्ट का आदेश हो, लेकिन यह एक अलिखित नैतिक दायित्व पहले से ही है। निश्चय ही यह घटनाक्रम हमारे समाज की बेहद कष्टदायक होती तसवीर को ही उकेरता है। सामान्य तौर पर मां-बाप अपना पेट काटकर, अपने सुख-सुविधाओं पर समझौता कर, बच्चों को बेहतर से बेहतर देने का प्रयास करते हैं। एक मां-बाप ही होते हैं जो सच्चे मन से अपने बच्चों की तरक्की चाहते हैं। निस्संदेह, ऐसी पढ़ी-लिखी संतानों से अनपढ़ संतानें बेहतर हैं। जो कम से कम अपने वृद्ध माता-पिता के पास रहकर उनका ख्याल तो रखती हैं। यह सवाल परेशान करने वाला है कि जिस समाज में 'मातृ देवो भव' की सर्वस्वीकार्य मान्यता रही हो, वहां ये कैसी कलयुगी संतानें जन्म ले रही हैं? मां-बाप की बेकद्री की यह अकेली कहानी नहीं है, हर रोज अखबारों में ऐसी घटनाएं सामने आती हैं, जिसमें घट-घटकर लिखे मां-बाप से झूटता की जा रही होती है। निस्संदेह, यदि उनकी अवहेलना व उत्पीड़न का यह क्रम यूं ही चलता रहा तो बहुत संभव है भारत में भी पश्चिमी देशों जैस चलन शुरू हो जाएगा, जहां मां-बाप बच्चों को होश संभालाने के बाद ही उन्हें पैरों पर खड़ा होने के लिये चलता कर देते हैं। दरअसल, पश्चिमी देशों में मां-बाप मानकर चलते हैं कि बड़े होकर बच्चों ने उनकी देखभाल नहीं करनी, अतः इनसे पहले ही किनारा कर लो। आधुनिकता व तरक्की की लाख इबारतें लिख ली जाएं, भारतीय समाज कभी पश्चिमी समाज की तर्ज पर नहीं चल सकता। भारत श्रवण कुमार का देश है और आज भी अधिसंख्य संतानें अपने मातृ-पितृ ऋण उतारती हैं। उनका ख्याल रखती हैं। विकृतियां महानगरीय संस्कृति की भी देन हैं। बच्चों की भी अपनी दुश्वारियां हैं। फिर भी भारतीय संस्कृति में वो शक्ति है जो पारिवारिक मूल्यों को सींचती है। बहरहाल, माता-पिता की सेवा-सम्मान व बुढ़ापे में उनकी देखभाल करना एक सांस्कृतिक दिखावा नहीं है बल्कि संतानों का नैतिक-कानूनी दायित्व भी है।

चिंतन-मनन

प्रतिभा और ज्ञान

एक संत को जंगल में एक नवजात शिशु मिला। वह उसे अपने घर जे आए। उन्होंने उसका नाम जीवक रखा। उन्होंने जीवक को अच्छी शिक्षा-दीक्षा प्रदान की। जब वह बड़ा हुआ तो उसने संत से पूछा, गुरुजी, मेरे माता-पिता कौन हैं? संत को जीवक के मुंह से यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन उन्होंने उसे सच बताने का निश्चय किया और बोले, पुत्र, तुम मुझे घने जंगलों में मिले थे। मुझे नहीं मालूम कि तुम्हारे माता-पिता कौन हैं और कहा हैं? जीवक अत्यंत उदास होकर बोला, गुरुजी, अब आत्महीनता का भार लेकर मैं कहाँ जाऊँ? इस पर संत उसे सात्वना देते हुए बोले, पुत्र, इस बात से दुखी होने के बजाय तुम तक्षशिला जाओ और वहां विद्याध्ययन करके अपने ज्ञान के प्रकाश से संपूर्ण समाज को आलोकित करो। जीवक अध्ययन के लिए चल पड़ा। वहां पहुंचकर वहां के आचार्य को उसने अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

आचार्य ने उसकी स्पष्टवादिता से प्रभावित होकर उसे विश्वविद्यालय में प्रवेश दे दिया। जीवक वहां पर कठोर परिश्रम के साथ विद्या प्राप्त करने लगा। वहां उसने आयुर्वेदचार्य की उपाधि प्राप्त की। संपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक दिन आचार्य जीवक से बोले, पुत्र, अब तुम मगध जाकर वहां के लोगों की सेवा करो। यह सुनकर जीवक परेशान हो गया। आचार्य उसे दुखी देखकर बोले, कौन सी बात तुम्हें टीस रही है? जीवक बोला, आचार्य, आप तो जानते ही हैं कि मेरा कोई कुल और गोत्र नहीं है। मैं जहां भी जाऊंगा, लोग मुझ पर उंगलियां उठाएंगे। क्या आप मुझे अपने पास ही नहीं रख सकते? उसकी बात सुनकर आचार्य बोले, वरस। तुम्हारी प्रतिभा और ज्ञान ही तुम्हारा कुल-गोत्र है। इन्हीं से तुम्हें सम्मान मिलेगा। आचार्य की बातों ने जीवक को नई दिशा दिखाई और वह मगध आ गया। वहां उसने लगन और मेहनत से काम किया। कुछ ही समय में वह पूरे मगध में आयुर्वेदचार्य के रूप में प्रसिद्ध हो गया।



सौरभ वार्ष्णेय

दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के बीच अलनीनो एक बार फिर भारत के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है। प्रशांत महासागर के तापमान में असााम्य वृद्धि से उत्पन्न होने वाली यह मौसमी घटना भारतीय मानसून को सीधे प्रभावित करती है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानसून की थोड़ी-सी गड़बड़ी भी खेती, अर्थव्यवस्था, जल संकट और महंगाई पर व्यापक असर डालती है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक है कि यदि अलनीनो का प्रभाव गहराता है, तो भारत के पास इससे निपटने के लिए क्या इंतजाम हैं? भारत का लगभग आधा कृषि क्षेत्र आज भी वर्षा पर निर्भर है। अलनीनो के कारण मानसून कमजोर पड़ता है, वर्षा कम होती है और कई राज्यों में सूखे जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। इसका सीधा असर किसानों की आम, खाद्यान्न उत्पादन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। यही नहीं, बिजली उत्पादन, पेयजल आपूर्ति और उद्योग भी प्रभावित होते हैं। इसलिए अलनीनो केवल मौसम की समस्या नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक चुनौती भी है। हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में भारत ने इस दिशा में कई



डॉ राघवेंद्र शर्मा

हमें कब कहाँ क्या बोलना चाहिए या नहीं बोलना चाहिए, या फिर हमें कब कहाँ क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए, यह सावधानी बड़े मायने रखती है। क्योंकि हमारे विद्वान कह गए हैं - *बिना बेचारे जो करे सो पाँछे से पछताय। काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हंसाय।।* अर्थात बिना विचार किये जो भी व्यक्ति कुछ कहता या करता है, वह खुद का काम तो बिगाड़ता ही है, साथ में हंसी का पात्र भी बनता है। आज यही हालत खुद को दुनिया का ठेकेदार मानने वाले देशों और वहां के कतिपय नेताओं की हो गई है। अमेरिका ने ईरान पर हमला क्यों बोला ? सब जानते हैं। इजरायली राष्ट्रपति बेंजामिन नेतन्याहू की दुश्मनी डोनाल्ड ट्रंप ने अपने ऊपर क्यों ली ? यह भी सबको पता है। रूस यूक्रेन लंबे समय से क्यों एक दूसरे के दुश्मन बने हुए हैं, यह भी किसी से छुपा नहीं है। रह जाती है खाड़ी देशों की बात, तो वहां से भी अच्छे समाचार नहीं मिल रहे। आपस में एक दूसरे के ठिकानों पर बमबारी करने की मजबूरी देखने को मिल रही है। लेकिन वैश्विक और क्षेत्रीय कुछ नेताओं ने युद्ध से पहले और युद्ध के दौरान जो कहा और किया, उस कृत्य ने उनकी वैश्विक छवि को हास्यास्पद बना दिया है। मसलन -

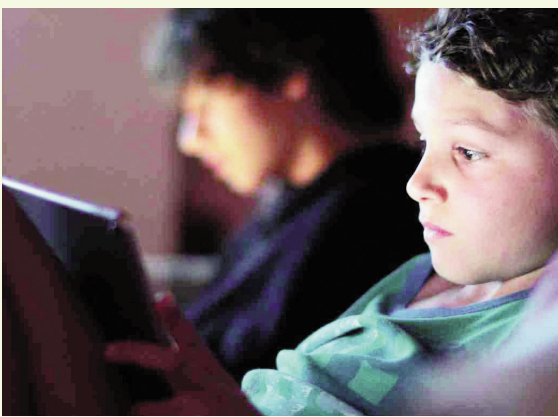


कि प्रधानमंत्री श्री मोदी हाल ही में जब 5 देशों की यात्रा पर गए तो हमेशा की तरह इस बार भी वहां के राष्ट्राध्यक्षों ने उनका बड़-चढ़कर सम्मान किया। यहाँ तक कि उन्हें सर्वोच्च सम्मान से अलंकृत किए जाने की श्रृंखला लंबी होती रही। यही नहीं, उक्त देशों ने भारत के साथ आर्थिक, ऊर्जा, सुरक्षा और तकनीकी सहयोग के मामलों में बेहद प्रसन्नता के साथ अनुबंध किये। इससे स्पष्ट हो जाता है कि वैश्विक स्तर पर भारत का दबदबा अन्य देशों की अपेक्षा ज्यादा तेजी से बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में वर्तमान भारत की आवाज और उसकी अपेक्षाओं को गंभीरता से लिया जाता है। काश यह बात दुनिया भर के राष्ट्राध्यक्षों के साथ-साथ हमारे देश के विपक्षी नेताओं की समझ में भी आ जाती।

(- लेखक मध्यप्रदेश योग अयोग के अध्यक्ष हैं।)



किया था। मिंटिफी फिनसर्व पर 3.10 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है। कंपनी ने कुछ ग्राहकों के केवाईसी (अपने ग्राहकों को जानें) रिकॉर्ड को निर्धारित समय सीमा के भीतर के दीर्घ केवाईसी रिकॉर्ड रजिस्ट्री पर अपलोड नहीं किया था। इसके अतिरिक्त नेवा इन्वेस्टमेंट्स 2.70 लाख रुपये का मौद्रिक दंड दिया गया। कंपनी ने निदेशकों की नियुक्ति करते समय आरबीसी के पूर्व लिखित अनुमति नहीं ली थी, जिसके परिणामस्वरूप उसके प्रबंधन में महत्वपूर्ण बदलाव आया, जिसमें स्वतंत्र निदेशकों को छोड़कर 30 प्रतिशत निदेशकों अधिक निदेशकों में परिवर्तन शामिल था। आरबीआई ने स्पष्ट किया कि ये जुर्माने केवल संबंधित नियमों के उल्लंघन के लिए लगाए गए हैं।



इस प्रकार बच्चों को मोबाइल की आदत से दूर करें

आजकल के बच्चों में मोबाइल फोन की आदत बहुत तेजी से बढ़ रही है। छोटा-सा बच्चा भी बार-बार फोन मांगता है, रोता है, जिद करता है और बिना फोन के चुप नहीं बैठता। यह आदत न सिर्फ पढ़ाई पर असर डालती है, बल्कि आंखों की रोशनी, नींद और व्यवहार पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है लेकिन अच्छी बात यह है कि थोड़ी समझदारी और लगातार कोशिश से इस आदत को छुड़ाया जा सकता है। इन तीन उपायों से बच्चा खुद फोन कम मांगेगा।

स्क्रीन टाइम तय करें

सबसे पहले घर में एक साफ नियम बनाएं कि फोन या टैबलेट सिर्फ तय समय पर ही इस्तेमाल होगा, जैसे दिन में 30-60 मिनट से ज्यादा नहीं। बच्चे को पहले से बता दें कि 'खेलने के बाद 30 मिनट फोन, फिर बंद'।

फोन की सेटिंग में जाकर स्क्रीन टाइम लिमिट लगा दें। एंड्रॉयड या आईफोन में पैरेंटल कंट्रोल ऑन करें, जहां आप ऐप्स को लॉक कर सकते हैं या समय खत्म होने पर ऑटोमैटिक बंद हो जाए। जब बच्चा बार-बार मांगे तो प्यार से कहें, 'देखो, टाइमर खत्म हो गया, अब हम साथ कुछ और खेलेंगे।' इससे बच्चे को लगेगा कि नियम सबके लिए हैं, न कि सिर्फ उस पर रोक लगी है। धीरे-धीरे वह आदत डाल लेगा और जिद कम होगी।

बच्चे को रोचक काम दें

ज्यादातर बच्चे फोन इसलिए मांगते हैं क्योंकि उन्हें कुछ और करने को नहीं मिलता। बोर होने पर फोन सबसे आसान लगता है। इसलिए घर में दूसरी एक्टिविटी बढ़ाएं। जैसे- बाहर पार्क में खेलना, साइकिल चलाना, घर में बोर्ड गेम खेलना, पेंटिंग करना, किताब पढ़ना या साथ मिलकर खाना बनाना। बच्चे को शामिल करें, जैसे 'आज हम सब मिलकर टेंट बनाएंगे।' या 'चलो, तुम्हारी फेवरेट स्टोरी सुनाऊं'।

जब बच्चा व्यस्त रहेगा तो फोन की याद ही नहीं आएगी। शुरुआत में मुश्किल लगेगी, लेकिन 7-10 दिन में फर्क दिखेगा। बच्चा खुद कहेगा, 'मम्मी, चलो खेलें'।

स्वयं परिवार साथ मिलकर कम फोन यूज करें

बच्चे वही सीखते हैं जो देखते हैं। अगर मम्मी-पापा खुद दिनभर फोन में लगे रहें तो बच्चा भी वैसा ही करेगा। सबसे पहले खुद फोन कम यूज करें। खाना खाते वक्त, बात करते वक्त या बच्चे के साथ खेलते वक्त फोन साइड में रखें। परिवार में 'नो फोन जोन' बनाएं, जैसे डिनर टेबल या बेडरूम में फोन न लाएं। सब मिलकर गेम खेलें, बातें करें या घूमने जाएं। जब बच्चा देखेगा कि घर में सब फोन कम यूज कर रहे हैं तो वह भी आसानी से मान जाएगा। ये तरीके सबसे ज्यादा असरदार हैं क्योंकि बच्चा कॉपी करता है। इससे न सिर्फ बच्चे की फोन मांगने की आदत कम होगी, बल्कि परिवार में प्यार, बातचीत और खुशी बढ़ेगी। शुरुआत में बच्चा रो सकता है या जिद कर सकता है, लेकिन प्यार और धैर्य से समझाएं।

इन विटामिन वाले

आहारों से बच्चों की आंखें होंगी तेज



ज्यादातर मोबाइल और लैपटॉप इस्तेमाल करने के कारण आजकल बच्चों की आंखें कमजोर होने लगी हैं। इसके अलावा गलत खान-पान भी बच्चों की आंखें कमजोर होने के मुख्य कारण हैं। ऐसे में छोटी उम्र में ही उन्हें चश्मा लगाने लगा है। इसके अलावा पोषण की कमी के कारण भी बच्चों की आंखें कम उम्र में ही कमजोर होने लगती हैं। ऐसे में बच्चों की आंखों को तेज बनाने इन विटामिनों से भरे फल उन्हें दें।

विटामिन-ई

विटामिन-ई से भरपूर आहार आप बच्चों की डाइट में शामिल कर सकते हैं। इसके लिए आप बच्चों को बादाम, मूंगफली, मक्के का तेल, सरसों के बीज जैसी चीजें खिला सकते हैं।

विटामिन-ए

यह शरीर की इम्युनिटी मजबूत बनाने और आई साइट को मजबूत बनाने में मदद करता है। शरीर में यदि इस विटामिन की कमी हो जाए तो बच्चों की आंखें तेजी से कमजोर होने लगती हैं। ऐसे में आप उन्हें डाइट में अंडा, लीवर, दूध, हरी सब्जियां, स्वीट पोटेटो, रंग-बिरंगे फल आदि खाने के लिए दें। जिक की कमी भी आंखों में रोशनी कम होने की समस्या बढ़ सकती है। जिक की कमी बच्चों के शरीर से पूरी करने के लिए आप उन्हें ओएस्टर, गेंहू और तरह के नट्स दे सकते हैं।

ओमेगा 3 फैटी एसिड

इसकी कमी होने के कारण भी बच्चों की आंखें कमजोर हो सकती हैं। ऐसे में बच्चों के शरीर में से ओमेगा-3 फैटी एसिड की कमी पूरी करने के लिए आप ड्राई फ्रूट्स, कोल्ड वॉटर फिश, ब्रोकोली उन्हें दे सकते हैं।



गधे को हुआ राजा बनने का शौक

एक घना और हरा-भरा जंगल था, जिसका नाम था 'सुंदरवन'। इस जंगल में हर तरफ हरियाली थी और नदी की कल-कल करती आवाजें गूंजती रहती थीं।

जंगल के किनारे एक छोटा सा गांव था। उस गांव में रामू नाम का एक धोबी रहता था, जिसके पास एक गधा था - 'भोलू'। भोलू दिन भर कपड़े धोता और रात को खूँटे से बंधा रहता। भोलू अपने इस जीवन से बहुत परेशान था। उसे लगता था कि वह किसी महान काम के लिए बना है। अक्सर रात के सन्नाटे में जब वह जंगल की तरफ देखता, तो उसे लगता कि काश! वह इस जंगल का राजा होता।

एक दिन रामू धोबी किसी काम से शहर गया और भोलू को खूँटे से बांधना भूल गया। भोलू ने मौका देखा और अपनी आजादी की ओर कदम बढ़ा दिए। वह भागता हुआ सीधे सुंदरवन के घने जंगल में जा पहुंचा।

जंगल में घुसते ही उसे एक अजीब सी आजादी का अहसास हुआ। तभी उसकी नजर एक पुराने खंडहर पर पड़ी। वह किसी जमाने में एक राजा का शिकारगाह हुआ करता था। वहां भोलू को एक पुराना सा राजसी लबादा (कपड़ा) और एक पीतल का चमचमाता हुआ मुकुट मिला, जो शायद कोई इंसान वहां भूल गया था। भोलू ने तुरंत वह लबादा ओढ़ लिया और सिर पर मुकुट रख लिया। पानी में अपनी परछाई देखकर भोलू को लगा कि वह सचमुच कोई महान सम्राट लग रहा है।

अब भोलू ने अपनी चाल बदल ली। वह सीना तानकर और अकड़कर चलने लगा। सबसे पहले उसकी मुलाकात 'चंपक' नाम के एक सीधे-सादे खरगोश से हुई। खरगोश ने जब मुकुट पहने हुए इस अजीबोगरीब जानवर को देखा, तो वह डर गया।

भोलू ने अपनी आवाज को भारी बनाते हुए कहा, 'डरो मत छोटे जीव। मैं दूर देश के जंगलों का महाराजा हूँ। भगवान ने मुझे तुम लोगों की रक्षा के लिए इस जंगल में भेजा है। सुना है तुम्हारे जंगल का शेर अब बहुत बूढ़ा हो गया है?'।

खरगोश तुरंत भागकर जंगल के बाकी जानवरों को यह खबर देने चला गया। यह बात जंगल में आग की तरह फैल गई।

कुछ ही देर में हाथी, हिरण, बंदर और जेब्रा भोलू के पास आ गए। भोलू एक ऊंचे पत्थर पर बैठ गया। उसने जानवरों को संबोधित करते हुए कहा, 'मेरे प्यारे वनवासियों! मैं देख रहा हूँ कि इस जंगल में कोई व्यवस्था नहीं है। शेर सिर्फ डराकर राज करता है। अगर तुम मुझे अपना राजा मान लो, तो मैं तुम्हें कभी शिकार नहीं बनाऊंगा। पूरे जंगल में लोकतंत्र होगा और हर रोज मीठी घास की दावत होगी!'।

हिरण और बंदर भोलू की इन मीठी बातों में आ गए। उन्हें लगा कि शायद यही वो आदर्श राजा है जिसकी उन्हें तलाश थी। जानवरों ने जयकारे लगाने शुरू कर दिए - 'नए राजा की जय हो! महाराजा की जय हो!'।

एक चतुर लोमड़ी भी थी, जिसका नाम था 'चलाकी'। लोमड़ी को भोलू की शक्ल और उसके लंबे कान देखकर कुछ शक हुआ। उसने सोचा कि यह जानवर शेर और हाथी से भी बड़ा राजा कैसे हो सकता है? इसके पैर तो बिल्कुल गधे जैसे दिख रहे हैं!

लोमड़ी ने धीरे से जाकर यह सारी बात जंगल के असली राजा, शेर सिंह को बता दी। शेर सिंह अपनी गुफा में आराम कर रहा था। यह सुनकर उसे भी अचरज हुआ कि उसके जीते-जी जंगल में कोई नया राजा कैसे आ गया? वह तुरंत अपने

मंत्रियों (भालू और चीते) को लेकर उस जगह की ओर निकल पड़ा।

इधर भोलू का राज्याभिषेक चल रहा था। बंदर उसे फलों की माला पहना रहे थे और हाथी अपनी सूंड से उस पर पानी छिड़क कर 'शाही स्नान' करा रहे थे। भोलू खुशी से फूला नहीं समा रहा था। उसे लगा कि उसका 'गधे से राजा बनने का शौक' पूरा हो गया है।

तभी अचानक एक भयंकर दहाड़ से पूरा जंगल कांप उठा। 'ग्र्र्र्र्र्र...!!'

शेर सिंह वहां पहुंच चुका था। उसकी लाल आंखें और रौद्र रूप देखकर सारे जानवर कांपने लगे और पीछे हट गए।

शेर सिंह ने भोलू की तरफ घूरते हुए कहा, 'कौन हो तुम? और मेरे जंगल में राजा बनने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?'।

भोलू शेर को देखकर अंदर तक कांप गया। उसकी सारी अकड़ हवा हो गई। लेकिन उसने सोचा कि अगर वह भी एक जोरदार दहाड़ लगाएगा, तो शायद शेर डर जाएगा। भोलू ने पूरा जोर लगाया, अपनी छाती फुलाई,

आंखें बंद कीं और अपनी पूरी ताकत से आवाज निकाली।

लेकिन भोलू ठहरा एक गधा। उसके मुंह से शेर की दहाड़ की जगह एक जोरदार आवाज निकली - 'ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!'।

यह आवाज सुनकर जंगल के सारे जानवर सन्न रह गए। उसी समय भोलू के सिर से वह पीतल का मुकुट भी नीचे गिर गया और उसका लबादा खिसक गया। अब सबके सामने एक साधारण सा गधा खड़ा था जो डर के मारे थर-थर कांप रहा था।

शेर सिंह यह देखकर जोर-जोर से हंसने लगा। 'हाहाहा! तो तुम एक गधे हो! और चले थे जंगल के राजा बनने?'।

चतुर लोमड़ी ने ताना मारते हुए कहा, 'देखा दोस्तों! मैंने कहा था ना कि कपड़े बदलने से किसी की असलियत नहीं बदलती।'।

बंदर, खरगोश और हिरण को अपनी मूर्खता पर बहुत शर्म आई। भोलू शेर के पैरों में गिर पड़ा और रोते हुए बोला, 'मुझे

माफ़ कर दीजिये महाराज! मुझे बस राजा बनने का शौक चढ़ गया था। मैं अब कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।'।

शेर सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं तुम्हें मारूंगा नहीं गधे, क्योंकि तुमने मुझे आज बहुत हंसाया है। लेकिन यह जंगल तुम्हारा घर नहीं है। वापस अपने मालिक के पास जाओ और वही काम करो जिसके लिए तुम बने हो।'।

भोलू वहां से दुम दबाकर जो भागा, तो सीधे रामू धोबी के घर जाकर ही रुका। उस दिन के बाद से भोलू ने फिर कभी राजा बनने का सपना नहीं देखा और चुपचाप अपना काम करने लगा।

बच्चों और बड़ों के लिए लिखी गई यह प्रेरक कहानी हमें एक बहुत बड़ी सीख देती है कि - 'केवल बाहरी रूप और कपड़े बदल लेने से कोई महान नहीं बन जाता। इंसान (या जानवर) की असली पहचान उसके गुणों और उसकी असलियत से होती है। जो हम हैं, हमें वही रहना चाहिए और दिखावे से बचना चाहिए।'।



बच्चों में कैल्शियम की कमी का इस प्रकार पता चलेगा



कैल्शियम बच्चों के लिए बेहद जरूरी है। इसकी कमी से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। ऐसे में बच्चों के लिए भी ये काफी जरूरी होता है। इसकी कमी से उनके शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।। ये उनकी हड्डियों और दांतों को मजबूत बनाने में मदद करता है। जैसे- जैसे बच्चे बड़े होते हैं, उनकी कैल्शियम की जरूरत भी बढ़ जाती है। अगर बच्चों को सही मात्रा में कैल्शियम नहीं मिलता, तो उनके शारीरिक और मानसिक विकास पर विपरी त प्रभाव पड़ता है।

कमी के हैं ये संकेत

कैल्शियम की कमी से बच्चों की हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। इसके कारण बच्चों को चलने-फिरने में परेशानी हो सकती है और वे दर्द महसूस कर सकते हैं। इससे शिशु को उठने और बैठने में भी मुश्किल हो सकती है। दांतों की समस्याएं - नवजात शिशुओं में दांतों का देर से आना, दांत कमजोर होना या दांतों में कैविटी की समस्या कैल्शियम की कमी के संकेत होत हैं। मांसपेशियों में दर्द : कैल्शियम की कमी से बच्चों की मांसपेशियों में ऐंठन और दर्द हो सकता है। यह एक सामान्य लक्षण है जिसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

शारीरिक विकास की धीमी गति : अगर बच्चे की लंबाई और वजन अपेक्षित दर से कम बढ़ रहे हैं, तो यह भी कैल्शियम की कमी का संकेत हो

सकता है। ऐसे में डॉक्टर से बच्चों की शारीरिक विकास की ट्रैकिंग के लिए सलाह लें। चिड़चिड़ापन : बच्चों का चिड़चिड़ा होना सामान्य हो सकता है, लेकिन अगर बच्चा हमेशा चिड़चिड़ा रहता है और छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा करता है, तो यह कैल्शियम की कमी का एक संकेत हो सकता है।

इस प्रकार कमी दूर करे

कैल्शियम युक्त आहार : बच्चों की डाइट में कैल्शियम से भरपूर खाद्य पदार्थों को शामिल करें। दूध, पनीर, दही और छाछ जैसे खाद्य पदार्थ बच्चों के शरीर में कैल्शियम की कमी को पूरा कर सकते हैं।

ड्राई फ्रूट्स का सेवन : बच्चों को रोजाना 4 बादाम और 1 अंजीर खिलाएं। इन दोनों में कैल्शियम और विटामिन की भरपूर मात्रा पाई जाती है। हमेशा बादाम और अंजीर को पानी में भिगोकर दें।

विटामिन डी की प्राप्ति : विटामिन डी कैल्शियम के अवशोषण में मदद करता है। बच्चों को सूरज की रोशनी में बैठने के लिए प्रेरित करें। रोजाना कम से कम आधे घंटे के लिए उन्हें धूप में खेलने का समय दें।

नियमित स्वास्थ्य जांच : कैल्शियम की कमी का पता लगाने के लिए बच्चों की नियमित मेडिकल जांच कराना बहुत जरूरी है। डॉक्टर से सलाह लेकर हर 3 महीने में बच्चे की जांच करवाएं।



प्लेऑफ की उम्मीद बचाने उतरेगी केकेआर और दिल्ली, जीत के अलावा कोई विकल्प नहीं

नई दिल्ली ।

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 के लीग चरण का आखिरी मुकाबला रविवार को कोलकाता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच खेला जाएगा। दोनों टीमों के लिए यह मुकाबला करो या मरो जैसा रहने वाला है, क्योंकि प्लेऑफ की धुंधली उम्मीदों को जिंदा रखने के लिए हर हाल में जीत जरूरी है। हालांकि यह भी संभव है कि मैच शुरू होने से पहले ही दोनों में से किसी एक टीम की उम्मीद पूरी तरह खत्म हो जाए। अंक तालिका में फिलहाल कोलकाता नाइट राइडर्स छठे स्थान पर है, जबकि दिल्ली कैपिटल्स आठवें नंबर पर मौजूद है। दोनों टीमों अभी भी गणितीय रूप से प्लेऑफ की दौड़ में बनी हुई हैं, लेकिन उनकी राह बेहद मुश्किल नजर आ रही है। प्लेऑफ की चौथी सीट के लिए सबसे मजबूत दावेदार पंजाब किंग्स मानी जा रही है, जिसका मुकाबला शनिवार को लखनऊ सुपर जायंट्स से होना है। यदि पंजाब यह मैच जीत जाती है तो उसके 15 अंक हो जाएंगे और दिल्ली की उम्मीदें वहीं खत्म हो जाएंगी, क्योंकि वह अधिकतम 14 अंक तक ही पहुंच सकता है।

गली क्रिकेट में गांगुली ने लगाया शतक

नई दिल्ली।

भारतीय क्रिकेट के दिग्गज पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने एक बार फिर अपने पुराने अंदाज से क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीत लिया है। ‘प्रिंस ऑफ कोलकाता’ और ‘ऑफ साइड के भगवान’ के नाम से मशहूर गांगुली ने करीब 14 साल बाद गली क्रिकेट में बल्ला थामा और धमाकेदार बल्लेबाजी करते हुए शानदार शतक जड़ दिया। सोशल मीडिया पर उनका यह वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसे फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। सौरव गांगुली ने साल 2008 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया था। हालांकि इसके बाद वह कुछ समय तक इंडियन प्रीमियर लीग में खेलते रहे, लेकिन 2012 के बाद उन्होंने पूरी तरह पेसेवर क्रिकेट से दूरी बना ली थी। क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद गांगुली लगातार प्रशासनिक भूमिकाओं में सक्रिय रहे और भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष पद तक की जिम्मेदारी भी संभाली। लंबे समय बाद उन्हें बल्ले के साथ मैदान पर देखकर फैंस पुराने दिनों को याद करने लगे। हाल ही में खेले गए एक गली क्रिकेट मुकाबले में सौरव गांगुली ने अपनी क्लास और आक्रामकता दोनों का शानदार प्रदर्शन किया। वायरल वीडियो के मुताबिक उन्होंने सिर्फ 68 गेंदों में 132 रन की विकफुल्ट पारी खेली। मैच के दौरान एक खास नियम बनाया गया था कि गांगुली को तीन बार आउट होने के बाद भी बल्लेबाजी जारी रखने की अनुमति होगी। लेकिन दादा ने अपने अंदाज में जवाब देते हुए कहा कि उनके लिए एक मौका ही काफी है। हालांकि मैदान पर मौजूद खिलाड़ियों के आग्रह पर वह दो बार बल्लेबाजी करने के लिए तैयार हो गए। इसके बाद गांगुली ने चौकों और छकों की झड़ी लगा दी और दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। सौरव गांगुली का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट करियर बेहद शानदार रहा है।

प्लेऑफ की जंग से पहले केकेआर को बड़ा झटका, अंगकृष रघुवंशी आईपीएल 2026 से बाहर

कोलकाता। इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में शानदार वापसी कर प्लेऑफ की उम्मीदें जिंदा रखने वाली कोलकाता नाइट राइडर्स को बड़ा झटका लगा है। टीम के युवा विकेटकीपर बल्लेबाज अंगकृष रघुवंशी चोट के कारण पूरे सीजन से बाहर हो गए हैं। फ्रेंचाइजी ने इसकी आधिकारिक जानकारी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की। टीम के अनुसार मुंबई इंडियंस के खिलाफ 20 मई को खेले गए मुकाबले के दौरान कैच पकड़ने की कोशिश में रघुवंशी को सिर में चोट लगी थी। इसके साथ ही उनके बाएं हाथ की उंगली में फ्रैक्चर भी पाया गया, जिसके चलते वह आईपीएल 2026 के बाकी मुकाबलों में हिस्सा नहीं ले सकेगे। कोलकाता

नाइट राइडर्स ने अपने बयान में कहा कि टीम अंगकृष रघुवंशी के जल्द और पूरी तरह स्वस्थ होने की कामना करती है। 21 वर्षीय युवा बल्लेबाज इस सीजन में टीम के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ियों में शामिल रहे हैं। विकेटकीपिंग के साथ-साथ उन्होंने बल्ले से भी लगातार शानदार प्रदर्शन किया और कई अहम पारियां खेलीं। अंगकृष रघुवंशी ने आईपीएल 2026 में 13 मैचों की 12 पारियों में 422 रन बनाए हैं। इस दौरान उनका औसत 42.20 और स्ट्राइक रेट 146.52 का रहा। उन्होंने पूरे सीजन में पांच अर्धशतक लगाए, जबकि उनका सर्वोच्च स्कोर नाबाद 82 रन रहा। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी और लगातार रन बनाने की क्षमता ने

केकेआर को मुश्किल परिस्थितियों में कई बार संभाला। अब रघुवंशी की गैरमौजूदगी टीम के लिए सबसे अहम मुकाबले से पहले बड़ी चिंता बन गई है। कोलकाता नाइट राइडर्स का लीग चरण का आखिरी मुकाबला 24 मई को राष्ट्रीय टीम को प्राथमिकता देनी चाहिए। जैकब बेथल ने इस सीजन में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए नौ मुकाबले खेले, लेकिन वह केवल 163 रन ही बना सके। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज का



के प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना बेहद कम मानी जा रही थी। लेकिन बाद के मुकाबलों में टीम ने दमदार प्रदर्शन किया और सात मैचों में लगातार जीत हासिल कर 12 अंक जुटाए। इस शानदार वापसी ने टीम को फिर से प्लेऑफ की दौड़ में ला खड़ा किया। अब कोलकाता को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ जीत दर्ज करने के साथ-साथ अन्य टीमों के नतीजों पर भी निर्भर रहना होगा।

सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ पाएंगे जो रूट? इंग्लैंड के स्टार बल्लेबाज ने तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली ।

टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड भारत के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के नाम दर्ज है। 15,921 रनों का यह ऐतिहासिक आंकड़ा लंबे समय तक अटूट माना जाता रहा, लेकिन अब इंग्लैंड के स्टार बल्लेबाज जो रूट इस रिकॉर्ड के बेहद करीब पहुंचते दिखाई दे रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में लगातार शानदार प्रदर्शन के दम पर रूट ने क्रिकेट जगत में इस बहस को तेज कर दिया है कि क्या वह सचिन का यह महान रिकॉर्ड तोड़ पाएंगे। जो रूट इस समय टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की सूची में दूसरे स्थान पर हैं। उनके नाम 13,943 रन दर्ज हैं और वह सचिन तेंदुलकर से सिर्फ 1,978 रन पीछे हैं। मौजूदा फॉर्म को देखते हुए माना जा रहा है कि अगर रूट फिट रहते हैं और अगले दो साल तक इसी निरंतरता के साथ खेलते हैं, तो वह इस रिकॉर्ड तक पहुंच सकते हैं।

एटीपी राउंडअप- हैम्बर्ग ओपन के फाइनल में पहुंचे टॉमी पॉल, लर्नर टिएन ने भी बनाई खिताबी मुकाबले में जगह

हैम्बर्ग,

23 मई (आईएनएस)। टॉमी पॉल ने जर्मनी में शुक्रवार को हुए सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया के एलेक्स डी मिनीर को 2-6, 6-3, 6-3 से हराकर हैम्बर्ग ओपन के फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। छठी वरीयता प्राप्त अमेरिकी खिलाड़ी पहला सेट हारने और दूसरे में 3-0 से पिछड़ने के बाद सीधे सेटों में हारने की राह पर लग रहे थे। हालांकि, पॉल ने लगातार नौ गेम जीतकर मैच का रुख बदल दिया और आखिरी सेट पर कंट्रोल कर लिया। इस जीत के साथ ही 28 वर्षीय पॉल अपने 10वें एटीपी टूर-लेवल फाइनल और इस सीजन में बले कोर्ट पर दूसरे

फाइनल में पहुंचे हैं। इससे पहले पिछले महीने ह्यूटन में उन्होंने खिताब जीता था। भले ही डी मिनीर ने 17 में से 13 ब्रेक पॉइंट बचाए, लेकिन उनका दूसरी सर्व में दिक्रत हुई, और वे उनमें से सिर्फ 44 प्रतिशत पॉइंट ही जीत पाए, क्योंकि पॉल ने बेसलइन से उन्हें धीरे-धीरे थका दिया था। पॉल अब फाइनल में इनासियो बुसे से मुकाबला करेंगे। 22 साल के बुसे ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए लकी लूजर एलेक्जेंडर कोवासेविक को सिर्फ 64 मिनट में 6-1, 6-4 से हराया। बुसे 2007 में लुइस हर्नांड के बाद एटीपी टूर-लेवल के फाइनल में पहुंचने वाले पेरू के पहले खिलाड़ी हैं। इस बीच, स्विट्जरलैंड में जिनेवा ओपन में अमेरिकी युवा लर्नर टिएन ने कजाकिस्तान के एलेक्जेंडर

बुब्लिक को 6-1, 4-6, 7-6(5) से हराकर अपने करियर के पहले क्ले-कोर्ट फाइनल में जगह बनाई। आखिरी सेट के टाईब्रेक में 6-1 की बढ़त बनाने के बाद टिएन आसान जीत की ओर बढ़ रहे थे, लेकिन घबराहट में उन्होंने चार मैच पॉइंट गंवा दिए और आखिरकार अपने पांचवें मैके पर जीत हासिल की। 20 वर्षीय टिएन 1990 में सर्गी बुगुएरा के बाद सबसे कम उम्र में जिनेवा ओपन के फाइनल में पहुंचने वाली खिलाड़ी बन गए हैं।



रजत पाटीदार ने बनाया बड़ा रिकॉर्ड, क्रिस गेल को पीछे छोड़ आईपीएल में रचा इतिहास

नई दिल्ली।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान रजत पाटीदार ने इंडियन प्रीमियर लीग में एक बड़ा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेले गए मुकाबले में उन्होंने आईपीएल करियर के 100 छक्के पूरे किए और इस मामले में टी20 क्रिकेट के दिग्गज क्रिस गेल को पीछे छोड़ दिया। पाटीदार ने यह उपलब्धि सिर्फ 933 गेंदों में हासिल की, जो किसी भी भारतीय बल्लेबाज द्वारा सबसे तेज 100 छक्के लगाने का रिकॉर्ड है। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेले गए मुकाबले में रजत पाटीदार ने 56 रनों की तेजतर्रार पारी खेली। अपनी इस पारी में उन्होंने 6 चौके और एक लंबा छक्का लगाया। इसी छक्के के साथ उन्होंने आईपीएल में 100 सिक्स पूरे किए। इससे पहले क्रिस गेल ने इस मुकाम तक पहुंचने के लिए 943 गेंदों का सामना किया था। पाटीदार ने उनसे 10 गेंद कम लेकर यह रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। हालांकि आईपीएल में सबसे कम गेंदों पर 100 छक्के लगाने के मामले में पाटीदार अभी तीसरे स्थान पर हैं। इस सूची में वेस्टइंडीज के विस्फोटक ऑलराउंडर आंद्रे रसेल शीर्ष पर बने हुए हैं। रसेल ने सिर्फ 657 गेंदों में 100 छक्के पूरे कर दिए थे।

शानदार प्रदर्शन के बावजूद टॉप-2 में नहीं पहुंच सकी सनराइजर्स, डेनियल विटोरी ने बताई टीम की सबसे बड़ी ताकत

नई दिल्ली ।

सनराइजर्स हैदराबाद के मुख्य कोच डेनियल विटोरी ने इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में टीम के शानदार प्रदर्शन का श्रेय शीर्ष क्रम के विस्फोटक बल्लेबाजों और अनुशासित गेंदबाजी आक्रमण को दिया है। हालांकि टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ 55 रन की शानदार जीत के बावजूद नेट रन रेट के कारण अंक तालिका में शीर्ष दो में जगह नहीं बना सकी और तीसरे स्थान पर रही। अब सनराइजर्स को एलिमिनेटर मुकाबला खेलना होगा। मैच के बाद डेनियल विटोरी ने कहा कि टीम ने पूरे सीजन में बेहतरीन क्रिकेट खेला है और नौ जीत दर्ज करना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि हर चीज हासिल करना संभव नहीं होता, लेकिन जिस तरह खिलाड़ियों ने प्रदर्शन किया, उससे टीम संतुष्ट है। विटोरी ने माना कि नेट रन रेट के कारण टीम थोड़ा पीछे रह गई, लेकिन इसके बावजूद खिलाड़ियों का प्रदर्शन शानदार रहा। सनराइजर्स हैदराबाद अब बुधवार को एलिमिनेटर मुकाबले में मैदान पर उतरेगी। प्लेऑफ से पहले विटोरी ने टीम के मध्यक्रम को लेकर चिंता भी ज़ाहिर की। उन्होंने कहा कि शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों ने पूरे सीजन में इतनी शानदार बल्लेबाजी

की कि मध्यक्रम को ज्यादा मौके ही नहीं मिले। ऐसे में बड़े मुकाबलों से पहले टीम इस पहलू पर ध्यान देगी ताकि जरूरत

पड़ने पर मध्यक्रम भी दबाव संभाल सके। विटोरी ने टीम के तेज गेंदबाजों की भी जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि ईशान मलिंगा, पेट कमिंस और साकिब हुसैन की तिकड़ी ने टूर्नामेंट के दूसरे चरण में बड़ा अंतर पैदा किया। उनके अनुसार गेंदबाजों ने बल्लेबाजों का शानदार साथ दिया और यही वजह रही कि टीम लगातार जीत दर्ज करने में सफल रही। विटोरी ने कहा कि उनकी रणनीति हमेशा पांचवें और छठे गेंदबाज के विकल्प पर आधारित रहती है और यह टीम संतुलन के लिए बेहद अहम होता है। उन्होंने बताया कि पिच की परिस्थितियों को देखते हुए टीम ने इस मुकाबले में हरल पटेल को मौका दिया था, लेकिन टीम के पास प्रफुल्ल हिंगे और हर्ष दुबे जैसे विकल्प भी मौजूद हैं। विटोरी ने कहा कि पिछले 12 मैचों में से आठ में जीत दर्ज करना टीम के सामूहिक प्रदर्शन को दर्शाता है ।



संक्षिप्त समाचार

सचिन तेंदुलकर ने साझा की बचपन की खास याद, बोले- ये बच्चे देश का भविष्य हैं

नई दिल्ली ।

महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के लिए ‘एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स फॉर ऑल’ यानी ईएसए पहल सिर्फ इंडियन प्रीमियर लीग से जुड़ा एक सामाजिक अभियान नहीं, बल्कि एक बेहद भावनात्मक और व्यक्तिगत पहल है। मुंबई इंडियंस के वार्षिक ईएसए मैच से पहले सचिन ने अपने बचपन की एक खास याद साझा करते हुए बताया कि कैसे वानखेडे स्टेडियम में बिताए गए कुछ पल आज भी उनके दिल में बसे हुए हैं। उनका मानना है कि इस बार मैच देखने आने वाले हजारों बच्चों के लिए भी यह अनुभव जीवनभर यादगार रहने वाला है। सचिन तेंदुलकर ने कहा कि वानखेडे स्टेडियम में होने वाला ईएसए मैच हमेशा बेहद खास होता है। उन्होंने स्टेडियम में होने वाले सभी तैयारियों का जिक्र करते हुए कहा कि इतने वर्षों तक बड़े-बड़े मुकाबले खेलने के बाद खिलाड़ी विशाल भीड़ के सामने खेलने के आदी हो जाते हैं, लेकिन जब हजारों बच्चे स्टैंड में बैठकर खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते हैं, तो वह अनुभव बिल्कुल अलग होता है। सचिन के अनुसार खिलाड़ियों के लिए भी यह बेहद भावुक और प्रेरणादायक माहौल होता है। रविवार को जब मुंबई इंडियंस और राजस्थान रॉयल्स की टीमों आमने-सामने होंगी, तब वानखेडे स्टेडियम सिर्फ क्रिकेट का मैदान नहीं रहेगा, बल्कि बच्चों के सपनों और खुशियों का केंद्र बन जाएगा। रिलायंस फाउंडेशन की ईएसए पहल के तहत मुंबई, महाराष्ट्र और गुजरात के पिछड़े इलाकों, आदिवासी क्षेत्रों, गांवों और विशेष जरूरतों वाले स्कूलों से 20 हजार से ज्यादा बच्चों को मैच देखने के लिए लाया जाएगा। इस पहल की शुरुआत नीता अंबानी ने की थी, जिसका उद्देश्य शिक्षा और खेल के जरिए बच्चों को प्रेरित करना है। इस बार पहली बार नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड के 100 दृष्टिहीन बच्चे भी इस आयोजन का हिस्सा बनेंगे। वे अपने साथियों के साथ स्टेडियम में बैठकर मैच का अनुभव करेंगे। सचिन तेंदुलकर ने इस मौके पर 1983 की एक याद भी साझा की। उन्होंने बताया कि जब वेस्टइंडीज की दिग्गज टीम भारत दौरे पर आई थी, तब वह वानखेडे स्टेडियम के नॉर्थ स्टैंड में बैठकर भारतीय टीम का समर्थन कर रहे थे। सचिन ने कहा कि वह अनुभव आज भी उनके दिल में ताजा है और उन्हें विश्वास है कि आज स्टेडियम में आने वाले बच्चों के साथ भी ऐसी ही यादें जीवनभर रहेंगी। सचिन तेंदुलकर ने कहा कि ये बच्चे देश का भविष्य हैं और आज यदि हम उनके लिए कुछ बेहतर कर सकते हैं, तो उसका सकारात्मक असर आने वाले समय में पूरे देश पर दिखाई देगा।

विराट कोहली और ट्रैविस हेड विवाद ने पकड़ा तूल, इंस्टाग्राम पोस्ट से बड़ी चर्चा

नई दिल्ली ।

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 में सनराइजर्स हैदराबाद और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बीच खेले गए मुकाबले के बाद विराट कोहली और ट्रैविस हेड के बीच हुए विवाद ने क्रिकेट जगत में नई बहस छेड़ दी है। मैच खत्म होने के बाद विराट कोहली द्वारा ट्रैविस हेड से हाथ नहीं मिलाने की घटना सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। इसी बीच ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ट्रैविस हेड की एक इंस्टाग्राम स्टोरी ने इस विवाद को और चर्चा में ला दिया है। ट्रैविस हेड ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर मैच के दौरान गेंदबाजी करते हुए अपनी एक तस्वीर साझा की। खास बात यह रही कि हेड आमतौर पर गेंदबाजी नहीं करते, लेकिन इस मुकाबले में उन्होंने गेंद हाथ में लिया और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के कप्तान रजत पाटीदार का विकेट भी हासिल किया।



एआई आधारित क्रिकेट प्लेटफॉर्म काबुनी से जुड़े एबी डी विलियर्स युवा खिलाड़ियों को मिलेगा विश्वस्तरीय मार्गदर्शन

नई दिल्ली ।

क्रिकेट ट्रेनिंग को नई दिशा देने वाले एआई आधारित स्पोर्ट्स टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्म काबुनी ने दक्षिण अफ्रीका के पूर्व दिग्गज कप्तान एबी डी विलियर्स को अपना सुपर कोच नियुक्त किया है। एबी डी विलियर्स के जुड़ने को कंपनी ने अपने मिशन की बड़ी उपलब्धि बताया है। काबुनी का उद्देश्य आधुनिक तकनीक और विश्वस्तरीय क्रिकेट अनुभव को जोड़ते हुए हर स्तर के खिलाड़ियों तक बेहतरीन कोचिंग पहुंचाना है। एबी डी विलियर्स अब इस प्लेटफॉर्म पर पहले से जुड़े सौरव गांगुली और शेन वॉटसन जैसे दिग्गजों के साथ काम करेंगे। कंपनी का मानना है कि एबी डी विलियर्स के अनुभव और काबुनी की अत्याधुनिक तकनीक का मेल युवा खिलाड़ियों को क्रिकेट सीखने का बिल्कुल नया तरीका देगा। इस सहयोग के तहत भारत में 12 से 16 वर्ष आयु वर्ग के खिलाड़ियों के लिए जून से एक राष्ट्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट भी शुरू किया जाएगा। इसमें हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों को एबी डी विलियर्स की टीम के लिए खेलने का अवसर मिल सकेगा। इस पूरी प्रक्रिया में काबुनी की एआई तकनीक का उपयोग किया जाएगा। काबुनी का प्लेटफॉर्म पारंपरिक क्रिकेट नेट प्रैक्टिस से अलग काम करता है। यह खिलाड़ी की मूवमेंट, शॉट चयन और गेंद की दिशा को रियल टाइम में ट्रैक करता है और फिर उसे आसान तथा उपयोगी फीडबैक में बदल देता है। कंपनी का +1 प्रतिशत इम्पूवमेंट+ मॉडल खिलाड़ियों की छोटी-छोटी गलतियों को पहचानकर उन्हें तुरंत सुधारने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य समय के साथ खिलाड़ियों के प्रदर्शन में बड़ा और स्थायी सुधार लाना है।



फिल्में सिर्फ समाज सुधार के लिए नहीं बनती

अभिनेत्री सोनाक्षी सिन्हा की अपकमिंग फिल्म 'सिस्टम' रिलीज के लिए तैयार है। इस बीच प्रमोशन में व्यस्त सोनाक्षी ने सिनेमा के उद्देश्य पर बात की। अपनी स्पष्ट राय रखते हुए उन्होंने बताया कि फिल्मों का एकमात्र मकसद समाज में बदलाव लाना नहीं है। फिल्में सिर्फ समाज सुधारने के लिए नहीं, मनोरंजन के लिए भी बनती हैं। अभिनेत्री का मानना है कि फिल्में मुख्य रूप से मनोरंजन के लिए बनाई जाती हैं और नैतिक शिक्षा देना फिल्म मेकर्स का काम नहीं है। खास बातचीत में सोनाक्षी ने कहा, 'मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि फिल्मों को सिर्फ समाज को सही रास्ते पर लाने का जरिया माना जाए। फिल्में मनोरंजन के लिए भी बनाई जाती हैं। सही और गलत की शिक्षा हमें अपने माता-पिता और स्कूल से मिलनी चाहिए। यह एक्टर्स या फिल्म मेकर्स का काम नहीं है।' सोनाक्षी ने बताया, 'आज हम एक वकील की कहानी बनाएंगे, कल हम एक सीरियल किलर की कहानी बना सकते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि लोग जाकर दूसरों को मारना शुरू कर दें। नैतिक मूल्य और सिद्धांत घर पर सिखाए जाते हैं। यह सिखाना हमारा काम नहीं है।' अभिनेत्री ने स्पष्ट किया कि फिल्मों में 12, 16 या 18 साल के दर्शकों के लिए उम्र के हिसाब से रेटिंग्स होती हैं। दर्शक खुद सही और गलत के बीच फर्क समझने में सक्षम हैं। सोनाक्षी ने बताया, 'कई बार फिल्मों को लेकर बड़ी बहस छिड़ जाती है कि यह गलत है, इसे दिखाना नहीं चाहिए। माफ कीजिए, लेकिन फिल्म एक कहानी है। दर्शकों को फिल्म को मनोरंजन के तौर पर देखना चाहिए। आखिरकार यह सिर्फ एक कहानी होती है। उन्होंने यह भी कहा कि कला समाज का आईना होती है। फिल्में अक्सर असल जिंदगी की घटनाओं या सच्ची कहानियों पर आधारित होती हैं। अगर कोई फिल्म 'सिस्टम' की तरह दर्शकों को सोचने पर मजबूर करे तो यह अच्छी बात है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हर फिल्म समाज सुधारने की जिम्मेदारी ले। फिल्म का निर्माण पम्मी बावेजा, हरमन बावेजा और स्मिता बालिमा ने किया है। अश्विनी अय्यर की फिल्म में सोनाक्षी के साथ अभिनेत्री ज्योतिका भी नजर आएंगी।



कई एक्टर्स के साथ जुड़ा सारा का नाम

इस दौरान आयुष्मान ने सारा के इस रुख को उनके पर्सनल लाइफ से जोड़ते हुए मजाक भी किया। आयुष्मान ने कहा, 'वह इसे जाने नहीं दे रही हैं। सारा उसे जाने दो, उसे भूल जाओ, उसे माफ कर दो। अगर वह दोबारा प्यार करे, तो शायद धोखा न दे।' सारा अली खान का नाम कई अभिनेताओं के साथ जुड़ चुका है। इनमें कार्तिक आर्यन से लेकर सुशांत सिंह राजपूत और वीर पहाड़िया के नाम शामिल हैं। वहीं पिछले साल सारा की अभिनेता-संगीतकार अजुन प्रताप बाजवा के साथ गुरुद्वारे जाते हुए तस्वीरें वायरल हुई थीं। इसके बाद दोनों के अफेयर की चर्चाओं ने जोर पकड़ा था।

सारा बोलीं- एक बार धोखा देने वाला, धोखेबाज ही होता है। हाल ही में रेड एफएम के साथ एक बातचीत के दौरान जब सारा अली खान से 'वन्स अ चीटर ऑलवेज अ चीटर' वाली कहावत पर भी अपनी प्रतिक्रिया दी।

एक बार धोखेबाज का टैग लग गया तो हटता नहीं

सारा अली खान और आयुष्मान खुराना इन दिनों अपनी हालिया रिलीज फिल्म 'पति पत्नी और वो दो' को लेकर चर्चाओं में हैं। फिल्म को क्लिक्स और दर्शकों से मिली-जुली प्रतिक्रिया हासिल हुई है। फिल्म प्यार, शादी, शक और धोखे पर आधारित है। इस बीच सारा अली खान ने रिश्ते में चीट करने यानी धोखा देने को लेकर बात की। साथ ही उन्होंने 'वन्स अ चीटर ऑलवेज अ चीटर' वाली कहावत पर भी अपनी प्रतिक्रिया दी।

थ्योरी पर राय मांगी गई, तो एक्ट्रेस ने इससे सहमति जताई। सारा ने कहा, 'मैं मानती हूँ कि एक बार धोखा देने वाला, हमेशा धोखेबाज होता है। क्योंकि उसने धोखा दिया है। धोखेबाज की परिभाषा क्या है? अगर किसी ने धोखा दिया है, तो वह धोखेबाज है।' हालांकि, फिल्म के साथी कलाकारों आयुष्मान खुराना और रकुल प्रीत सिंह ने सारा के मत से सहमति नहीं जताई।

आयुष्मान और रकुल ने सारा से जताई असहमति

आयुष्मान खुराना ने इस कहावत पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'एक बार धोखा देने वाले से एक बार धोखा देने वाले बनने तक का सफर होता है। कोई भी जन्म से धोखा देने वाला नहीं होता।' वहीं रकुल प्रीत सिंह ने भी आयुष्मान से सहमति जताते हुए कहा कि जरूरी नहीं कि वह व्यक्ति दोबारा धोखा दे। हालांकि, सारा इससे सहमत नहीं थीं और उन्होंने कहा, 'आपको धोखेबाज का लेबल लग जाता है और इसे बदला नहीं जा सकता। अगर वह धोखेबाज है, तो संभावना है कि वह दोबारा धोखा देगा, लेकिन शायद नहीं भी दे। एक बार धोखा देने के बाद आप यह कहने का अधिकार खो देते हैं कि यह मेरे बस की बात नहीं है, मैं इसे दोबारा कभी नहीं करूंगा। आप धोखेबाज हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि आप दोबारा धोखा दें। यह एक अलग बात है। मैं यह नहीं कह रही हूँ कि वह फिर से धोखा देगा, लेकिन एक बार जब आपको वह टैग मिल जाता है, तो उसे हटाया नहीं जा सकता।'



फिल्म 'डीसी' से निर्देशक लोकेश कनगराज कर रहे हैं एक्टिंग डेब्यू

वामिका गब्बी मौजूदा वक्त में इंडस्ट्री की सबसे व्यस्त अभिनेत्रियों में से एक हैं। पिछले महीने 'भूत बंगला' की सफलता के बाद कल ही उनकी नई फिल्म 'पति पत्नी और वो दो' रिलीज हुई है। अब उनकी आगामी फिल्म 'डीसी' रिलीज को तैयार है। फिल्म का ट्रेलर 79वें कान फिल्म फेस्टिवल में जारी किया गया है। 'डीसी' से निर्देशक से एक्टर बने लोकेश कनगराज अपना एक्टिंग डेब्यू कर रहे हैं। 3 मिनट 13 सेकंड के इस ट्रेलर में लोकेश कनगराज को देवदास और वामिका को चंद्रा के रूप में दिखाया गया है। ट्रेलर में दिखाया जाता है कि चंद्रा के माता-पिता ने कोलकाता में उसे कई साल पहले अवैध रूप से देह व्यापार में बेच दिया था। अब उसके पास रहने की कोई जगह नहीं है। जल्द ही पता चलता है कि देवदास एक पुलिस वाले और डॉक्टर चंद्रा की हत्या के आरोप में वॉन्टेड है। इसके बाद ट्रेलर में जबरदस्त एक्शन, खूनखराबा, बम धमाके और गोलीबारी देखने को मिलती है। ट्रेलर में लोकेश के साथ-साथ वामिका भी कई मौकों पर एक्शन करती नजर आती हैं। ट्रेलर का अंत एक रोमांटिक अंदाज में होता है, जहां वामिका और लोकेश सूर्यास्त के समय एक पहाड़ी पर खड़े नजर आते हैं। ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर भी चर्चा में आ गया। हालांकि, अधिकांश यूजर्स ट्रेलर में सबसे ज्यादा प्रभावित अनिरुद्ध के म्यूजिक से हुए हैं। जबकि कई यूजर्स ने ट्रेलर में वामिका और लोकेश की भी जमकर तारीफ की है। फैंस को फिल्म का बेसब्री से इंतजार है।

भारत में एक्टर्स को अपने ही लोग बुरी तरह ट्रोल करते हैं

अभिनेत्री अमीषा पटेल एक्टिंग के साथ ही कई मुद्दों पर भी खुलकर अपनी राय रखती नजर आती हैं। इसी कड़ी में उन्होंने सोशल मीडिया पर लोगों के ट्रोलिंग कल्चर पर तीखा हमला बोला। अमीषा का कहना है कि भारत में एक्टर्स को अपने ही लोग हॉलीवुड सितारों से ज्यादा बुरी तरह ट्रोल करते हैं, जो बेहद दुखद और शर्मनाक है। अमीषा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि भारतीय मानसिकता अब दूसरों को नीचे गिराने वाली हो गई है। अमीषा ने बड़े इवेंट्स में सितारों के लुक और पहनावे को लेकर फैल रही नकारात्मकता पर भी नाराजगी जताई। उन्होंने इसे 'दुखद' और 'शर्मनाक' बताया। अमीषा ने लिखा, 'भारत में एक्टर्स को अपने ही लोग, हॉलीवुड सितारों की तुलना में उनके अपने देश में ज्यादा बुरी तरह ट्रोल करते हैं, जो बहुत दुख की बात है।' हालांकि, ये कोई पहली बार नहीं है, जब अमीषा पटेल खुलकर अपनी बात रखती नजर आईं। इससे पहले वह एक्टर्स के पीआर गेम को लेकर पहले भी सुर्खियों में रह चुकी हैं। उन्होंने हाल ही में अपने एक्स पोस्ट पर कहा कि वे अपने बयान पर पूरी तरह कायम हैं। दरअसल, मुंबई में पैपराजी से बात करते हुए अमीषा ने कहा था, 'सही तो कहा मैंने। आजकल सभी अपने आप को नंबर वन समझते हैं।' अमीषा ने एक्स पोस्ट पर यंग एक्टर्स पर तंज कसते हुए

लिखा था कि जिन्होंने अभी तक कोई 200 करोड़ क्लब की फिल्म नहीं दी है, वे पीआर टीम को पैसे देकर खुद को नंबर 1 और नंबर 2 बता रही हैं। अमीषा ने साफ कहा, 'खुद को सुपरस्टार तभी कहो, जब तुमने कोई ऐसा काम किया हो जो इतिहास रच दे। पीआर के खेल खेलना बंद करो।



अपने पिता कमल हासन की हॉलीवुड फिल्म के लिए यह खास काम करेंगी श्रुति

अभिनेता और राजनेता कमल हासन तमिलनाडु चुनावों के बाद अब वापस फिल्मों में व्यस्त होने जा रहे हैं। चर्चा है कि वे पहली बार एक हॉलीवुड फिल्म में मुख्य भूमिका निभा सकते हैं। उनकी बेटी श्रुति हासन इस फिल्म के लिए एक खास काम करेंगी। एक खबर के अनुसार, कमल हासन एक हॉलीवुड फिल्म में नजर आ सकते हैं। इस फिल्म की कहानी कमल की बेटी श्रुति हासन लिख रही हैं। हालांकि, अभी तक दोनों की तरफ से इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। हाल ही में उनकी अमेरिका यात्रा को स्टेट डायरेक्टर जोड़ी 'अंबरीव' के साथ आने वाली फिल्म से जोड़कर देखा जा रहा था, लेकिन अब माना जा रहा है कि यह यात्रा उनकी हॉलीवुड फिल्म के सिलसिले में थी। कमल हासन इस समय कई बड़ी फिल्मों से जुड़े हुए हैं। कमल लगभग 40 साल बाद रजनीकांत के साथ निर्देशक नेल्सन की फिल्म में नजर आएंगे। साथ ही वह रजनीकांत की फिल्म 'थलाइवर 173' को भी सपोर्ट कर रहे हैं।



भोजपुरी इंडस्ट्री के कलाकारों की भी कद्र होने लगी है



फिल्म 'लापता लेडीज' की रिलीज के समय तक सांसद व एक्टर रवि किशन को लगता था कि उन्हें हिंदी सिनेमा में कम आंका जा रहा है। फिलहाल, अब उनके लिए रोल लिखे जा रहे हैं। यही नहीं, उनके साथ भोजपुरी इंडस्ट्री के और भी कलाकारों की कद्र होने लगी है। उनके मुताबिक, भगवान शिव को एक्टर ने धारण कर रखा है और उनका अनुसरण करके ही वो निस्वार्थ भाव से देश की सेवा के लिए समर्पित हैं। इन दिनों वह 'मामला लीगल है 2' को लेकर चर्चा में हैं।

लोगों की पीड़ाओं को महसूस कर सकता हूँ मैं हालात का मारा इंसान हूँ, जो बड़ी जिल्लतों और रिजेक्शन से निकलकर आया है इसलिए मुझमें कभी नेता वाले विचार नहीं आते। हां, मैं सेवक जरूर हूँ। मैंने भगवान शिव को धारण किया है कि कंट में विष है, ना उसे पेट के अंदर लेते हैं और ना ही समाज में बाहर निकालते हैं। मैं अपनी सारी पीड़ाओं, यातनाओं को जेहन में रखकर सिर्फ निःस्वार्थ भाव से सेवा करता हूँ। इसके लिए मैं बहुत संसटिव रहता हूँ। गोरखपुर (संसदीय क्षेत्र) में जो भी मेरे पास आता है, उसकी सुनवाई होनी ही है। मेरे कार्यालय को निर्देश है कि कोई भी फरियादी दोबारा ना आए। एक बार में ही उसका काम हो जाना चाहिए। मैं एक कलाकार हूँ और मैंने गरीबी देखी है इसलिए मैं लोगों की पीड़ाओं

को महसूस कर सकता हूँ। 600 से 700 लोग मेरे शरीर में रहते हैं मेरे अनगिनत रूप हैं इसलिए जो भी किरदार मिलता है, उसे करता चला जाता हूँ। शायद, यही वजह है कि मुझे कभी सोचने का समय ही नहीं मिला कि मेरी पसंद क्या है। अभी मैं एक और फिल्म कर रहा हूँ करण जोहर की, उसमें इच्छाधारी अजगर बनकर आऊंगा, जो अपना स्या चलाता है। जितने लोग असल जिंदगी में मिले हैं, जिन्होंने मुझे प्रभावित किया है, वो सब मेरे शरीर के अंदर से चिल्लाते हैं कि हम कब बाहर आएंगे। ऐसे 600 से 700 लोग अभी भी मेरे शरीर में रहते हैं।

रेंगकर यहां तक पहुंचा हूँ

फिल्म 'लापता लेडीज' के बाद अब हिंदी सिनेमा में मेरे लिए रोल लिखे जा रहे हैं। ऐसे में उन सभी लोगों से कहना चाहूंगा, जो सिर्फ सिनेमा में ही नहीं अपनी दुनिया में संघर्ष कर रहे हैं। शराब ना पीएं, ड्रग्स से दूर रहें और सुइसाइड ना करें। आपको घबराना नहीं है। जिन्हें डर लगता है, उनको मुझे देखना चाहिए। मैं एक ऐसा इंसान हूँ, जो मिट्टी के घर से निकलकर आज यहां तक पहुंचा है। मैं तो रेंगकर ऊपर आया हूँ। अपनी खुद की इंडस्ट्री बनाई और खुद को

सुपरस्टार घोषित किया। लोगों ने नया कबूतर पकड़ लिया है फिल्म धुरंधर को सबको सपोर्ट करना चाहिए था। वह सिर्फ सिनेमा है, कोई प्रपोगेंडा नहीं है। एक शब्द निकला है प्रोपोगेंडा, यह लोगों ने एक नया कबूतर पकड़ लिया है। यह सिनेमा है, इसे 'शोले' की तरह देखें। फिल्म में जो हुआ है, उसे ही बताया गया है। इसके जरिए एक बार फिर सिनेमाघरों में रोक लौट आई है। इंडस्ट्री की बहुत बुरी हालत थी, लोग हॉल नहीं जा रहे थे। फिल्में नहीं चलेगी तो लोगों को काम नहीं मिलेगा। मुंबई बहुत महंगा शहर है। ऐसे में एक्टरों का सर्वाइव करना मुश्किल हो जाएगा। मेरी भी खाहिश है कि मैं आदित्य धर के निर्देशन में काम करूँ। पहली बार सुना चूहा गांजा खाता है मेरे जीवन का सबसे मुश्किल फैसला कलाकार बनना था। पिताजी पुजारी थे, वो इसके सख्त खिलाफ थे। उनको लगता था कि मैं सिर्फ डॉसर बनकर रह जाऊंगा। उन्होंने कई बार पिटाई भी की लेकिन मैं नहीं रुका। मुझे लगता है कि मेरी और जहां तक भगवान शिव की भी इच्छा थी कि मैं एक्टर बनूँ। वेब सीरीज में जज का किरदार निभाकर मुझे उनके काम करने के नियम, कानून क्या-क्या हैं, वो पता चले।

सीरीज की कहानी सत्य घटनाओं से प्रेरित है तो सेट पर चर्चाएं हुआ करती थीं। इस दौरान मुझे पता चला कि चूहा गांजा खाता है। हाल ही में गुजरात में ऐसा मामला चर्चा का विषय बना, जिसमें बताया गया कि बीते 12 वर्षों में पकड़े गए 3620 किलोग्राम मादक पदार्थों में से 35 प्रतिशत चूहे खा गए।

भोजपुरी स्टार्स के टैलेंट की कद्र हो रही है

रवि किशन और दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' दोनों कलाकार भोजपुरी इंडस्ट्री से ताल्लुक रखते हैं। अब हिंदी सिनेमा में साथ काम करने को लेकर वे कहते हैं कि मैं बेहद खुश हूँ। मैं हमेशा से यही चाहता था कि मेरे सभी जूनियर्स ग्रे करें। आगे भी मेरी खाहिश है कि वो हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में अपना नाम रोशन करते रहें। मुझे भी उन सबके साथ काम करके मजा आता है। खास बात है कि उनका टैलेंट अब दुनिया के सामने आ रहा है और लोग उसकी कद्र कर रहे हैं। यही हर स्टार का सपना होता है कि उसका काम लोगों के दिल-ओ-दिमाग में बस जाए।

